हिंदी

सुगमभारती

सातवीं कक्षा

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

हिंदी सुगमभारती अध्ययन निष्पत्ति : सातवीं कक्षा

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	अध्ययन निष्पत्ति
सभी विद्यार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम विद्यार्थियों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए, ताकि उन्हें – • हिंदी भाषा में बातचीत तथा चर्चा करने के अवसर हों । • प्रयोग की जाने वाली भाषा की बारीकियों पर चर्चा के अवसर हों । • समूह में कार्य करने और एक-दूसरे के कार्यों पर चर्चा करने, राय लेने-देने, प्रश्न करने की स्वतंत्रता हो । • हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने-लिखने की सुविधा (ब्रेल/ सांकेतिक रूप में भी) और उन पर बातचीत की स्वतंत्रता हो । • अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों । • हिंदी भाषा गढ़ते हुए लिखने संबंधी गतिविधियाँ हो, जैसे – शब्द खेल, अनौपचारिक पत्र, तुकबंदियाँ, पहेलियाँ, संस्मरण आदि । • सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, फिल्म और ऑडियो-वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने, और लिखकर अभिव्यक्त करने की गतिविधियाँ हों । • कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे – अभिनय (भूमिका अभिनय), कविता, पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों और उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट लेखन और वृत्तांत लेखन के अवसर हों । • विद्यालय / विभाग / कक्षा की पत्रिका / भित्ति पत्रिका निकालने के लिए प्रोत्साहन हों।	**विद्यार्थी –** 07.LB.01 विविध प्रकार की रचनाओं (गीत, कथा, एकांकी, रिपोर्ताज, निवेदन, निर्देश) आदि को आकलनसहित सुनते हैं, पढ़कर समूह में चर्चा करते हैं तथा सुनाते हैं। 07.LB.02 सुने हुए वाक्य, उससे संबंधित अन्य वाक्य, रचना के परिप्रेक्ष्य में कहे गए विचार, वाक्यांशों का अनुमान लगाते हुए समझकर अपने अनुभवों के साथ संगति, सहमति या असहमति का अनुमान लगाकर अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं । 07.LB.03 किसी चित्र या दृश्य को देखने, अनुभवों की मौखिक/लिखित सूचनाओं को आलेख रूप में परिवर्तित करके अभिव्यक्त करते हैं तथा उसका सारांश लेखन करते हैं। 07.LB.04 दिए गए आशय, पढ़ी गई सामग्री से संबंधित प्रश्न निर्मिति करते समय दिशा निर्देश करते हुए किसी संदर्भ को अपने शब्दों में पुनः प्रस्तुत करते हैं तथा उचित उत्तर लेखन करते हैं । 07.LB.05 विभिन्न स्थानीय सामाजिक एवं प्राकृतिक मुद्‌दों/घटनाओं के प्रति चिकित्सक विचार करते हुए विषय पर चर्चा करते हैं । 07.LB.06 लिखित संदर्भ में अस्पष्टता, संयोजन की कमी, विसंगति, असमानता तथा अन्य दोषों की पहचानकर वाचन करते हैं। उसमें किसी बिंदु को खोजकर अपनी संवेदना, अनुभूति, भावना आदि को उपयुक्त ढंग से संप्रेषित करते हैं । 07.LB.07 जोड़ी/गुट में कृति/उपक्रम के रूप में संवाद, प्रहसन, चुटकुले, नाटक आदि को पढ़ते हैं तथा उसमें सहभागी होकर प्रभावपूर्ण प्रस्तुति करते हैं । 07.LB.08 रूपरेखा एवं स्वयंस्फूर्त भाव से संवाद, पत्र, निबंध, वृत्तांत, घटना, विज्ञापन आदि का वाचन एवं लेखन करते हैं । 07.LB.09 दैनिक कार्य नियोजन एवं व्यवहार में प्रयुक्त मुहावरों, कहावतों, नए शब्दों को सुनते हैं, मौखिक रूप से प्रयोग करते हैं तथा लिखित रूप से संग्रह करते हैं । 07.LB.10 पाठ्‌यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझते हुए स्वयं के लिए आवश्यक जानकारी, चित्र, वीडियो क्लिप, फिल्म आदि अंतरजाल पर खोजकर तथा औपचारिक अवसर पर संक्षिप्त भाषण तैयार करके लिखित वक्तव्य देते हैं । 07.LB.11 दिए गए आशय का शाब्दिक और अंतर्निहित अर्थ श्रवण करते हुए शुद्‌ध उच्चारण, उचित बलाघात, तान-अनुतान एवं गति सहित मुखर एवं मौन वाचन करते हैं । 07.LB.12 प्रसार माध्यमों एवं अन्य कार्यक्रमों को सुनकर उनके महत्वपूर्ण तत्वों, विवरणों, प्रमुख मुद्‌दों आदि को पुनः याद कर दोहराते हैं तथा अपने संभाषण एवं लेखन में उनका प्रयोग करते हैं ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया।
दि. ३.३.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई।

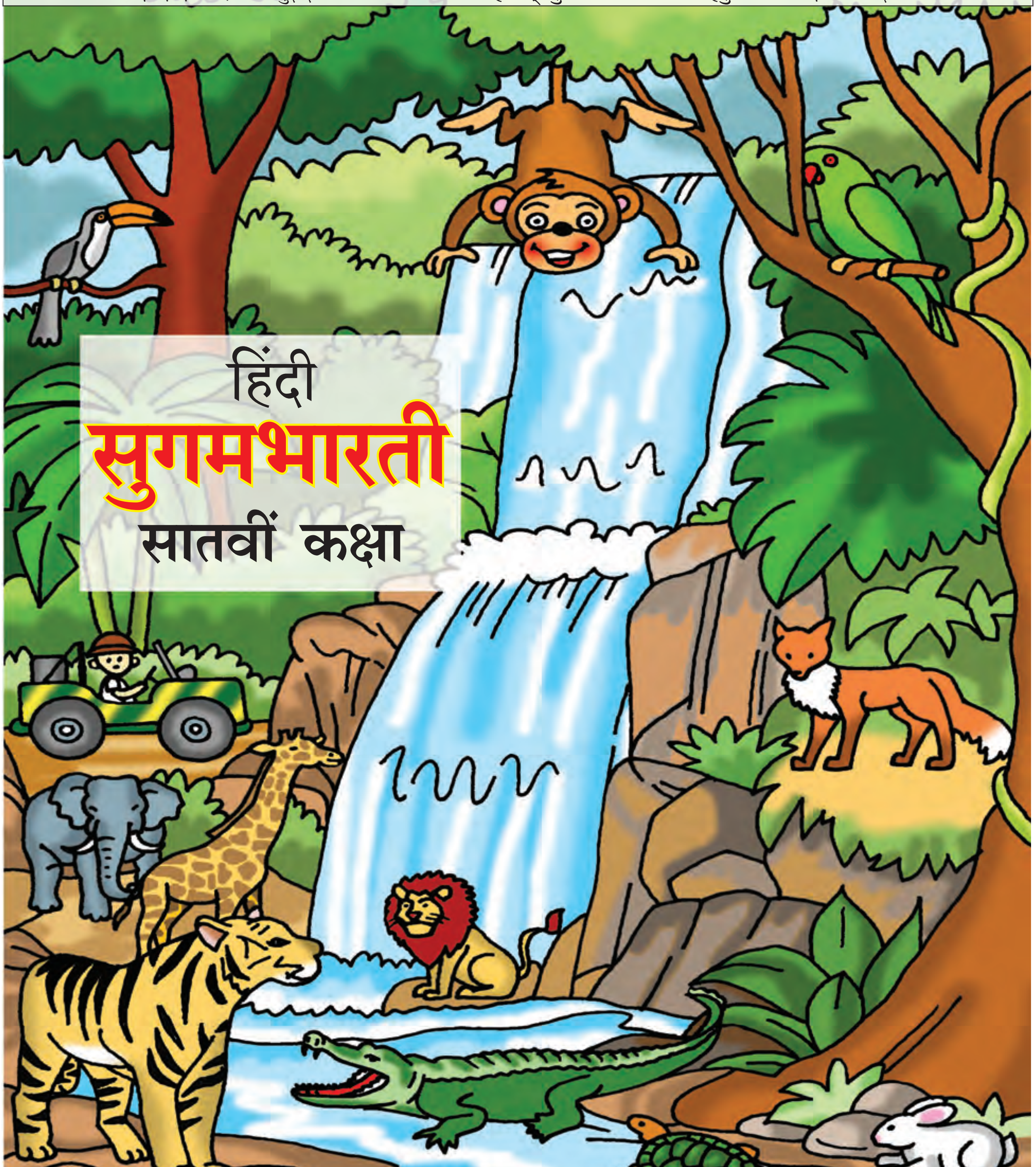

हिंदी

सुगमभारती

सातवीं कक्षा

मेरा नाम ________________ है।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

L5LYUN

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रथमावृत्ति : २०१७
पाँचवाँ पुनर्मुद्रण : २०२२

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे – ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्य – अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील – सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला – सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी – सदस्य
श्री संतोष धोत्रे – सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी – सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे – सदस्य
डॉ.अलका पोतदार – सदस्य – सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

श्री रामहित यादव
सौ. वृंदा कुलकर्णी
डॉ. वर्षा पुनवटकर
श्रीमती माया कोथळीकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
श्री प्रकाश बोकील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
डॉ.शैला चव्हाण
श्रीमती शारदा बियानी
श्री नरसिंह जेवे
श्रीमती गीता जोशी
श्रीमती अर्चना भुसकुटे
डॉ. रत्ना चौधरी
श्री सुमंत दळवी
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्रीमती रंजना पिंगळे
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
श्रीमती निशा बाहेकर
डॉ. शोभा बेलखोडे
श्रीमती रचना कोलते
श्री रविंद्र बागव
श्री काकासाहेब वाळुंजकर
श्री सुभाष वाघ

संयोजन :
डॉ.अलका पोतदार,
विशेषाधिकारी हिंदी भाषा,
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी,
विषय सहायक हिंदी भाषा,
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ :
मयुरा डफळ
चित्रांकन :
श्री राजेश लवळेकर, मयुरा डफळ

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई-२५

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री संदीप आजगांवकर, निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2022-23/
मुद्रक : M/s

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को,

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन - अधिनायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्‌ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्‌धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्‌यार्थियो,

तुम सब पाँचवीं तथा छठी कक्षा की हिंदी सुगमभारती पाठ्‌यपुस्तक से परिचित हो और अब सातवीं हिंदी सुगमभारती पढ़ने के लिए उत्सुक होंगे । रंगीन चित्रों से सुसज्जित यह पुस्तक तुम्हारे हाथों में देते हुए अत्यधिक हर्ष हो रहा है ।

तुम्हें गेय कविता, गीत, गजल सुनना प्रिय रहा है । कहानियों के विश्व में विचरण करना मनोरंजक लगता है । निबंध, आत्मकथा जैसी विधाएँ तुम्हारे ज्ञानार्जन के लिए उपयोगी हैं । प्रयोगधर्मी बच्चों को पुस्तक में आए संवाद, एकांकी, नाटक आदि बोलने हेतु प्रोत्साहित करेंगे । इसमें भाषाई कौशल– श्रवण, भाषण–संभाषण, वाचन, लेखनवाली अध्ययन निष्पत्तियाँ तुम्हें भाषा की दृष्टि से सक्षम बनाने के लिए आवश्यक रूप से दी गई हैं ।

डिजिटल दुनिया की नई सोच, चिकित्सक दृष्टि तथा अभ्यास को खोजबीन, सदैव ध्यान में रखो, जरा सोचो तो, मैंने क्या समझा आदि के माध्यम से पाठ्‌यपुस्तक में प्रस्तुत किया गया है । तुम्हारी सर्जना और पहल को ध्यान में रखते हुए अनेक स्वयं अध्ययन संबंधी कृतियाँ दी गई हैं । अपेक्षित भाषाई प्रवीणता के लिए भाषा अध्ययन, अध्ययन कौशल, विचार मंथन, मेरी कलम से, पूरक पठन आदि को अधिक व्यापक और रोचक बनाया गया है ।

लक्ष्य की प्राप्ति बिना मार्गदर्शक के पूरी नहीं हो सकती । अतः अपेक्षित प्रवीणता तथा उद्‌देश्य की पूर्ति हेतु अभिभावकों, शिक्षकों का सहयोग तथा मार्गदर्शन तुम्हारे कार्य को सफल बनाने में सहायक सिद्‌ध होगा ।

विश्वास है कि तुम सब पाठ्‌यपुस्तक का उपयोग कुशलतापूर्वक करोगे और हिंदी विषय के प्रति विशेष अभिरुचि एवं आत्मीयता की भावना के साथ उत्साह प्रदर्शित करोगे ।

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे–०४

पुणे
दिनांक :– २८ मार्च २०१७

✻ अनुक्रमणिका ✻

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम		पृष्ठ क्र.
१.	वाचन मेला		१
२.	विश्वव्यापक प्रेम		२–३
३.	अपकार का उपकार		४–६
४.	वार्षिकोत्सव		७–९
५.	(अ) गणित का जादू		१०
	(ब) पहेली		१०
	(स) अचंभा		११
६.	परिश्रम ही पूजा		१२–१४
७.	कुछ पाकर देख		१५–१६
	✻ अभ्यास – १		१७
	✻ पुनरावर्तन – १		१८

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम		पृष्ठ क्र.
१.	अस्पताल	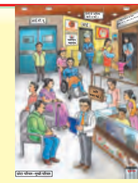	१९
२.	सब चढ़ा दो वहाँ		२०–२१
३.	अलग अंदाज में होली		२२–२४
४.	सोनू हाथी		२५–२८
५.	(अ) असली गवाह		
	(ब) जीवन		२९–३०
६.	कुछ स्मृतियाँ		३१–३३
७.	प्यारा देश		३४–३५
	✻ अभ्यास – २		३६
	✻ अभ्यास – ३ चित्रकथा	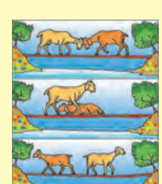	३७
	✻ पुनरावर्तन – २		३८

● **देखो, समझो और बताओ :**

१. वाचन मेला

❑ **अध्यापन संकेत :** विद्‌यार्थियों से चित्र का सूक्ष्म निरीक्षण कराएँ । शब्द और वाक्य समझाएँ । प्रदर्शनी में की जाने वाली उद्‌घोषणाएँ सुनने के लिए कहें । पुस्तक संबंधी अन्य घोषवाक्य बनवाएँ । इंटरएक्टिव आदि डिजिटल साहित्य की जानकारी देकर प्रयोग करवाएँ ।

● **सुनो और गाओ :**

२.विश्वव्यापक प्रेम

– राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज

जन्म : १९०९, यावली (महाराष्ट्र) **मृत्यु :** १९६८ **रचनाएँ :** ग्रामगीता, लहर की बरखा **परिचय :** 'मानवता ही पंथ मेरा' मानने वाले तुकडोजी महाराज का जीवन समानतावादी था । शांति के पथ पर बढ़ते हुए आपने सामाजिक क्रांति का मार्ग बताया है ।
प्रस्तुत पद में राष्ट्रसंत तुकडोजी ने ईश्वर की विश्वव्यापकता एवं गुरु की कृपा के महत्त्व को दर्शाया है ।

सुनो तो जरा

पसायदान सुनो और सुनाओ ।

हर देश में तू हर भेष में तू, तेरे नाम अनेक तू एक ही है ।
तेरी रंगभूमि यह विश्व भरा, सब खेल में, मेल में तू ही तू है ।।१।।

सागर से उठा बादल बन के, बादल से फटा जल हो करके ।
फिर नहर बनी नदियाँ गहरी, तेरे भिन्न प्रकार तू एक ही है ।।२।।

चींटी से भी अणु-परमाणु बना, सब जीव जगत का रूप लिया ।
कहीं पर्वत, वृक्ष विशाल बना, सौंदर्य तेरा तू एक ही है ।।३।।

यह दिव्य दिखाया है जिसने, वह है गुरुदेव की पूर्ण दया ।
तुकड्या कहे कोई न और दिखा, बस मैं और तू सब एक ही है ।।४।।

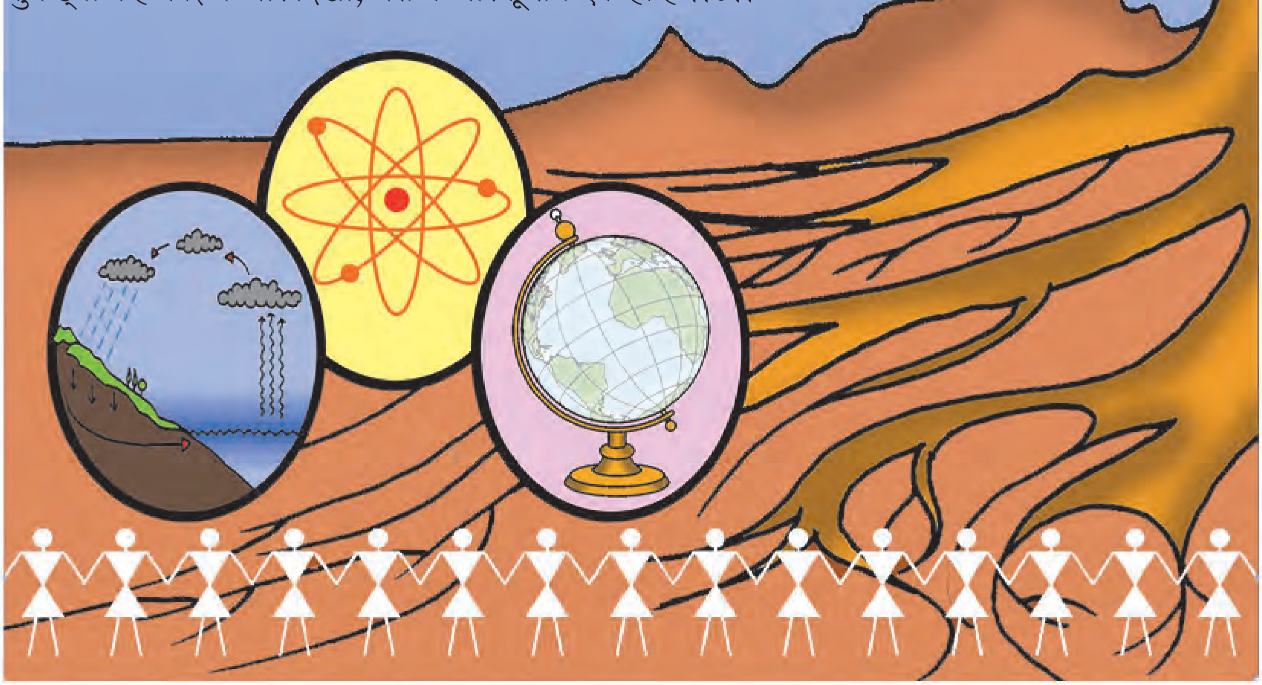

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ प्रार्थना का पाठ करके विद्यार्थियों को सुनाएँ । उनसे कविता का सामूहिक, गुट में गायन करवाएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता के भाव स्पष्ट करें । विद्यार्थियों को कोई अन्य गीत सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

भेष = रूप, पोशाक **नहर** = सिंचाई के लिए कृत्रिम माध्यम

रंगभूमि = रंगमंच **विशाल** = बहुत बड़ा

वाचन जगत से

संकेत स्थल पर जाकर महाराष्ट्र राज्य के खादी ग्रामोद्‌योग की जानकारी पढ़ो और मुद्‌दों के आधार पर भाषण दो :

धागा → निर्माण प्रक्रिया → वितरण

स्वयं अध्ययन

किसी महिला संत की जीवनी अंतरजाल से ढूँढ़कर लिखो ।

विचार मंथन

।। सर्वे भवंतु सुखिनः,
सर्वे संतु निरामयाः ।।

✼ कविता की पंक्तियाँ पूर्ण करो :

(क) सागर से ----------------- । -------------प्रकार तू एक ही है ।

(ख) चींटी से ----------------- । ---------------- तेरा तू एक ही है ।

भाषा की ओर

निम्नलिखित वर्णों से समानार्थी और विरुद्धार्थी शब्दों की जोड़ियाँ ढूँढ़ो और अपने वाक्यों में प्रयोग करके कॉपी में लिखो :

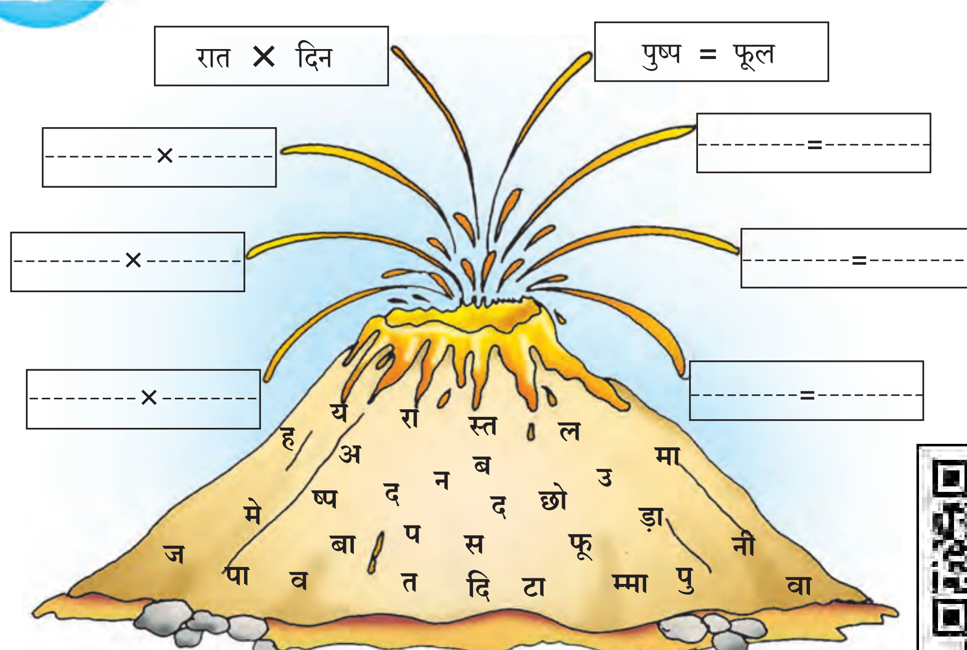

❑ **कृति/प्रश्न हेतु अध्यापन संकेत –** प्रत्येक कृति/प्रश्न को शीर्षक के साथ दिया गया है । दी गई प्रत्येक कृति/प्रश्न के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराएँ । क्षमताओं और कौशलों के आधार पर इन्हें विद्यार्थियों से हल करवाएँ । आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए अन्य शिक्षकों की भी सहायता प्राप्त करें । 'दो शब्द' में दी गई सूचनाओं का पालन करें । **दिए गए सभी कृति/प्रश्नयुक्त स्वाध्यायों का उपयोग कक्षा में समयानुसार 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' के लिए करना है ।**

● सुनो और दोहराओ :

३. अपकार का उपकार

– डॉ. दर्शनसिंह आशट

जन्म : १५ दिसंबर १९६५, बरास, पटियाला (पंजाब) **रचनाएँ :** पापा अब ऐसा नहीं होगा, मेहनत की कमाई का सुख आदि । **परिचय :** साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत बालसाहित्यकार डॉ. आशट जी ने पंजाबी, हिंदी, उर्दू, राजस्थानी आदि भाषाओं में लेखन किया है ।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने यह संदेश दिया है कि हमारे साथ दुर्व्यवहार करने वालों के साथ भी सौहार्दपूर्ण व्यवहार करना चाहिए ।

स्वयं अध्ययन

परिसर के पशु-पक्षियों की उपयोगिता पर चर्चा करो ।

किसी तालाब में एक कछुआ रहता था । तालाब के बिलकुल किनारे पर जामुन का एक पेड़ था । समय आने पर उसपर मीठे जामुनों के गुच्छे लगते । पास के गाँव से लड़के उस पेड़ के जामुन खाने के लिए आते ।

कुछ ही दिनों के बाद जामुन के उस पेड़ पर एक कौआ और उसकी पत्नी आकर रहने लगे । कौआ अक्सर दूसरों को परेशान करता रहता या लड़ता-झगड़ता रहता । जब कछुआ तालाब से निकलकर जमीन पर आता तो कौआ उसकी पीठ पर सवार हो जाता और उछल-कूद करता । कई बार तो कौआ अपनी ताकत का दिखावा करता हुआ उसे उलट-पलट भी देता। उससे दुखी था कछुआ । इसके विपरीत कौए की पत्नी नम्र स्वभाव की थी । पति-पत्नी के स्वभाव की असमानता से कछुआ भलीभाँति परिचित था । कछुए से दुर्व्यवहार करने के लिए पत्नी उसे अक्सर मना करती ।

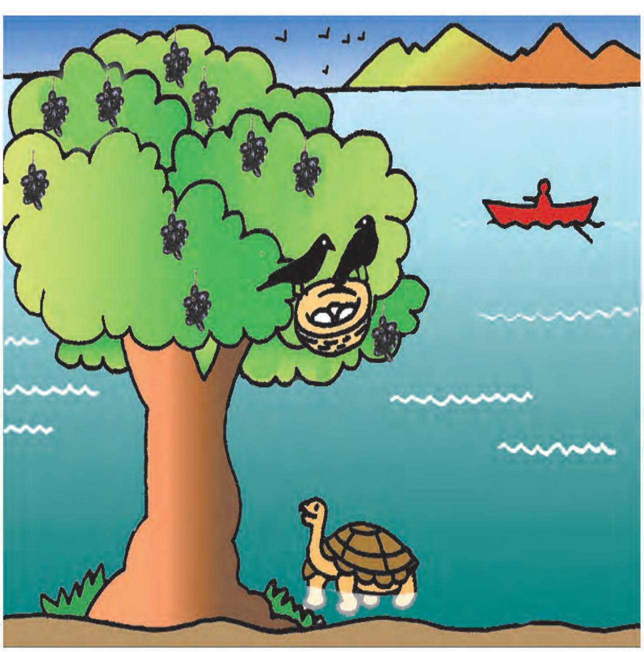

एक दिन जब कछुआ तालाब से निकलकर जमीन पर धीरे-धीरे चलने लगा तो कौए की नजर उसपर जा पड़ी और वह झट से उसपर चढ़ गया । कछुए को गुस्सा आ गया । वह बोला, ''क्यों भाई कौए, मेरी पीठ पर चढ़कर मुझे तंग क्यों करते रहते हो, आखिर तुम मुझसे चाहते क्या हो?'' ''तेरे ऊपर मजे से सवारी करना चाहता हूँ । ऐसा करने से मुझे बड़ा मजा आता है,'' हँसता हुआ कौआ बोला।

कछुए ने पूछा, ''दूसरों को तंग-परेशान करके खुश होना, कहाँ की भलमनसाहत है? क्या तुम भी मुझे अपनी पीठ पर बिठा सकते हो?'' कौआ एकदम बोला, ''क्यों, मैं तुझे क्यों बिठाऊँ अपनी पीठ पर?'' जब कौआ कछुए को और भी ज्यादा परेशान करने लगा तो कछुए ने तालाब से बाहर आना कम कर दिया।

कुछ दिनों के बाद कौए की पत्नी ने घोंसले में अंडे दिए । उधर पेड़ पर लगे जामुनों के गुच्छे भी पकने लगे थे । एक दिन गाँव के लड़के आए और जामुन के पेड़ पर चढ़कर जामुन खाने लगे तो कौआ दंपति ने 'काँव-काँव, काँव-काँव' करके आसमान सिर पर उठा लिया। एक लड़का जब कौए के घोंसले के पास जाकर एक गुच्छे को तोड़ने का प्रयत्न करने लगा तो

❑ कहानी के किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें। विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ। कहानी की प्रमुख घटनाओं, विशेष शब्दों पर चर्चा कराएँ। विद्यार्थियों को कहानी उनके शब्दों में कहने के लिए कहें । ब्लॉग से किसी बोधप्रद कहानी का वाचन कराएँ ।

विचार मंथन

।। जियो और जीने दो ।।

हिलने-डुलने के कारण घोंसले में से एक अंडा निकलकर सीधा तालाब में जा गिरा ।

कौआ दंपति अपना एक अंडा तालाब में गिर जाने के कारण बहुत दुखी हो गया । वे तालाब के किनारे बैठकर फूट-फूट कर रोने लगे । पानी में बैठे कछुए ने गिरते हुए अंडे को देख लिया था । कुछ ही पल बाद वही कछुआ अपने मुँह में उनका अंडा लिए बाहर आया और घास पर रखता हुआ बोला, ''शुक्र है कि तुम्हारा अंडा पानी में ही गिरा । यदि थोड़ा दूसरी तरफ गिर जाता तो टूट जाता । मैंने पानी में से ही इसे गिरते हुए देखकर मुँह में पकड़ लिया । उसके अंदर की जान बच गई है । अब चिंता की बात नहीं । यह सुरक्षित है । सँभालिए ।''

कछुए की यह बात सुनकर कौआ अपनी करनी पर बहुत दुखी हुआ । उसे अपनी एक-एक करतूत याद आ रही थी पर अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत । कछुए को धन्यवाद देने के लिए उन दोनों पति-पत्नी के पास शब्द नहीं थे ।

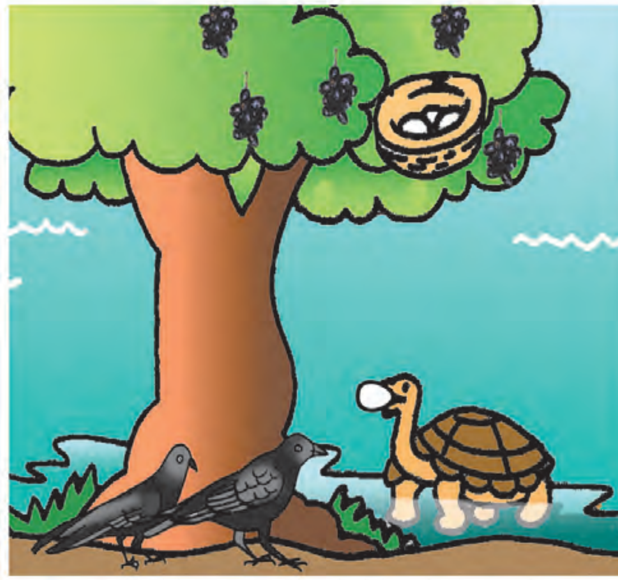

कौए ने कहा, ''आज मेरी आँखें खुल गईं । मैं अपने किए पर लज्जित हूँ । मैं भविष्य में किसी को कष्ट नहीं दूँगा ।'' कछुए ने कहा, '' जब जागो तभी सवेरा'' । अब सब हिल-मिलकर रहेंगे ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

अक्सर = प्रायः

दुर्व्यवहार = बुरा व्यवहार

तंग करना = परेशान करना

भलमनसाहत = सज्जनता

दंपति = पति-पत्नी

करनी = कृति

मुहावरे

आसमान सिर पर उठा लेना = शोर मचाना

फूट-फूट कर रोना = विलाप करना ।

जब जागो तभी सवेरा = जब समझो तभी अच्छा

कहावत

अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत = अवसर निकल जाने के बाद पश्चाताप का कोई लाभ नहीं ।

❑ कहानी में आए संज्ञा शब्दों की सूची बनवाएँ । इन शब्दों का वर्गीकरण संज्ञा भेदों के अनुसार करवाएँ । गुट बनाकर इस कहानी को संवाद रूप में प्रस्तुत करने के लिए कहें । कहानी में आए कौआ और कछुआ के स्वभाव के अंतर बताने के लिए प्रेरित करें ।

सुनो तो जरा

क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले के कार्य सुनो और प्रमुख कार्य सुनाओ ।

वाचन जगत से

किसी साहस कथा की घटना का पूर्वानुमान लगाते हुए वाचन करो ।

अध्ययन कौशल

किसी नियत विषय पर भाषण देने हेतु टिप्पणी बनाओ :

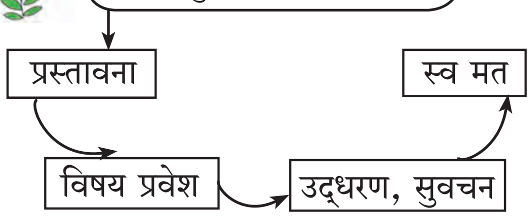

सदैव ध्यान में रखो

सदैव विनम्र शब्दों में ही निवेदन करना चाहिए ।

✲ कौन ? बताओ :

(क) कछुए को तंग-परेशान करने वाला = ---------। (ग) पेड़ के जामुन खाने के लिए आने वाले = ------।

(ख) मुँह में अंडा पकड़ने वाला = ------------- । (घ) दुर्व्यवहार करने से रोकने वाली = ----------।

भाषा की ओर

निम्नलिखित शब्दों के वचन और लिंग बदलकर वाक्य में प्रयोग करके लिखो :

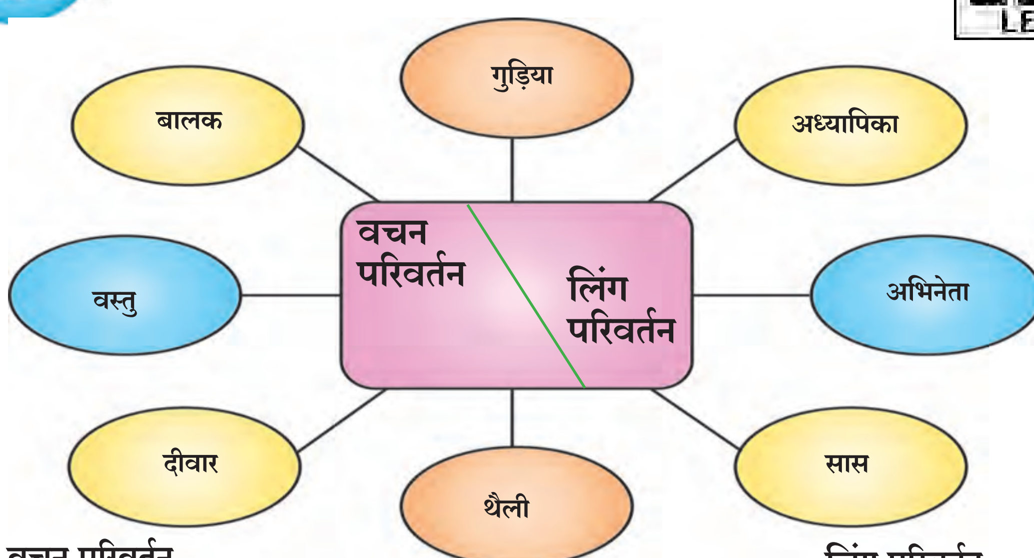

वचन परिवर्तन

१. पॉलिथिन की थैलियाँ इधर-उधर मत फेंको ।

२. ....

३. ....

४. ....

लिंग परिवर्तन

५. मेरे गुड्डे की पोशाक सुंदर है ।

६. ....

७. ....

८. ....

● **सुनो, समझो और सुनाओ :**

४. वार्षिकोत्सव

इस पत्र द्वारा विद्यार्थी ने अपने विद्यालय में मनाए गए वार्षिकोत्सव समारोह का आँखों देखा हाल अपने मित्र को बताया है ।

खोजबीन

डाकघर से प्राप्त सेवाएँ बताओ और संकेत स्थलों से अन्य सेवाएँ ढूँढ़कर उनकी सूची बनाकर सुनाओ ।

सेवाओं के नाम | कब ली जाती हैं ?

नागपुर
दि. ७ जनवरी, २०१७

प्रिय मित्र संजय,

नमस्कार ।

तुम्हारा पत्र मिला । तुम्हारे विद्यालय में संपन्न हुए वार्षिकोत्सव का वर्णन पढ़कर बहुत आनंद आया ।

दो दिन पूर्व हमारे विद्यालय में भी वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से संपन्न हुआ । इस समारोह के अध्यक्ष एक भूतपूर्व सैनिक थे । मुख्य अतिथि के रूप में महापौर पधारी थीं ।

इस अवसर पर अनेक रोचक कार्यक्रम संपन्न हुए । सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए । इनके द्वारा भारत के सभी प्रदेशों की सांस्कृतिक झाँकियाँ प्रस्तुत की गईं । विद्यार्थियों की 'विविध वेशभूषा' ने दर्शकों की वाह-वाही लूटी । विभिन्न खेलों की स्पर्धाएँ भी संपन्न हुईं ।

इस अवसर पर वर्षभर की विविध प्रतियोगिताओं एवं उपक्रमों में विजयी विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया । इन विद्यार्थियों के मार्गदर्शक शिक्षक-शिक्षिकाओं को भी सम्मानित किया गया । वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में आकर्षक रंगोली की प्रदर्शनी लगाई गई थी । स्वादिष्ट व्यंजनों की प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया था । इनमें विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया । इन सभी की अतिथि महोदया एवं अध्यक्ष जी ने मुक्तकंठ से सराहना की ।

मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में विद्यार्थियों को प्रतियोगिताओं में प्राप्त सफलता पर बधाइयाँ दीं । उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन की कई घटनाएँ सुनाईं । मुख्य अतिथि ने बच्चों को बताया कि वे अपने माता-पिता और गुरुजनों की प्रत्येक बात ध्यान से सुनें और उनका पालन करें । विद्यालय में सीखी गई बातें उन्हें हमेशा संबल देती रहेंगी । समारोह के अध्यक्ष ने विद्यालय की रचनात्मक गतिविधियों की प्रशंसा की और कहा, "देश होगा तभी बलवान, जब बलिदान देगा हर नौजवान ।" उन्होंने विद्यार्थियों को देश एवं समाज के लिए त्याग करने हेतु तत्पर रहने के लिए प्रेरित किया । हिंदी के महत्त्व को बताते हुए समझाया कि इसका प्रयोग अनुवाद, संचार माध्यम, फिल्मों एवं संपर्क भाषा के रूप में बढ़ रहा है । आपको हिंदी का अध्ययन करना जरुरी है ।

❑ पत्र का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । चर्चा द्वारा पत्र का ढाँचा श्यामपट्ट पर लिखकर अच्छी तरह समझाएँ । पत्र में प्रेषक और प्राप्तकर्ता के स्थान के अंतर को स्पष्ट करें । छात्रों से वार्षिकोत्सव का वृत्तांत लिखने के लिए प्रोत्साहित करें ।

बताओ तो सही

स्वयं किए हुए कार्य

- घर
- विद्यालय
- परिवेश
- त्योहार

मुझे विश्वास है कि वार्षिकोत्सव समारोह का वर्णन पढ़कर तुम्हें आनंद होगा । चाचा जी और चाची जी को मेरा प्रणाम कहना । बहन स्वाति को मेरा स्नेह ।

तुम्हारा मित्र
अविनाश

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द
सराहना = प्रशंसा
संबल = आधार
गतिविधि = कृति
बलिदान = न्यौछावर
मुहावरा
वाह-वाही लूटना = शाबाशी पाना ।

अध्ययन कौशल

अपना दैनिक नियोजन बनाकर लिखो तथा अपने व्यवहार में प्रयोग करो ।

विचार मंथन

।। तोल-मोल के बोल ।।

वाचन जगत से

अंतरजाल से कागज की खोज संबंधी जानकारी पढ़ो ।

जरा सोचो .... लिखो

शिक्षक दिवस पर तुम्हें प्रधानाध्यापक बनाया जाए तो ...

सदैव ध्यान में रखो

पत्र विचारों के आदान-प्रदान के साधन होते हैं ।

✻ सही शब्द चुनकर वाक्य फिर से लिखो :

(क) इस समारोह के अध्यक्ष एक ------ सैनिक थे ।
[संस्था, प्रधान, भूतपूर्व]

(ख) अध्यक्ष ने विद्‌यालय की ------ गतिविधियों की प्रशंसा की ।
[सौंदर्यपूर्ण, रचनात्मक, कृतिप्रधान]

(ग) अतिथि के रूप में ------ पधारी थीं ।
[प्राचार्य, महापौर, उपमहापौर]

(घ) विभिन्न खेलों की ------ संपन्न हुईं ।
[प्रतियोगिताएँ, स्पर्धाएँ, प्रतिद्‌वंद्‌विताएँ]

भाषा की ओर

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़ो और मोटे अक्षरों में छपे शब्दों पर ध्यान दो, पढ़कर उद्‌देश्य-विधेय अलग करके लिखो :

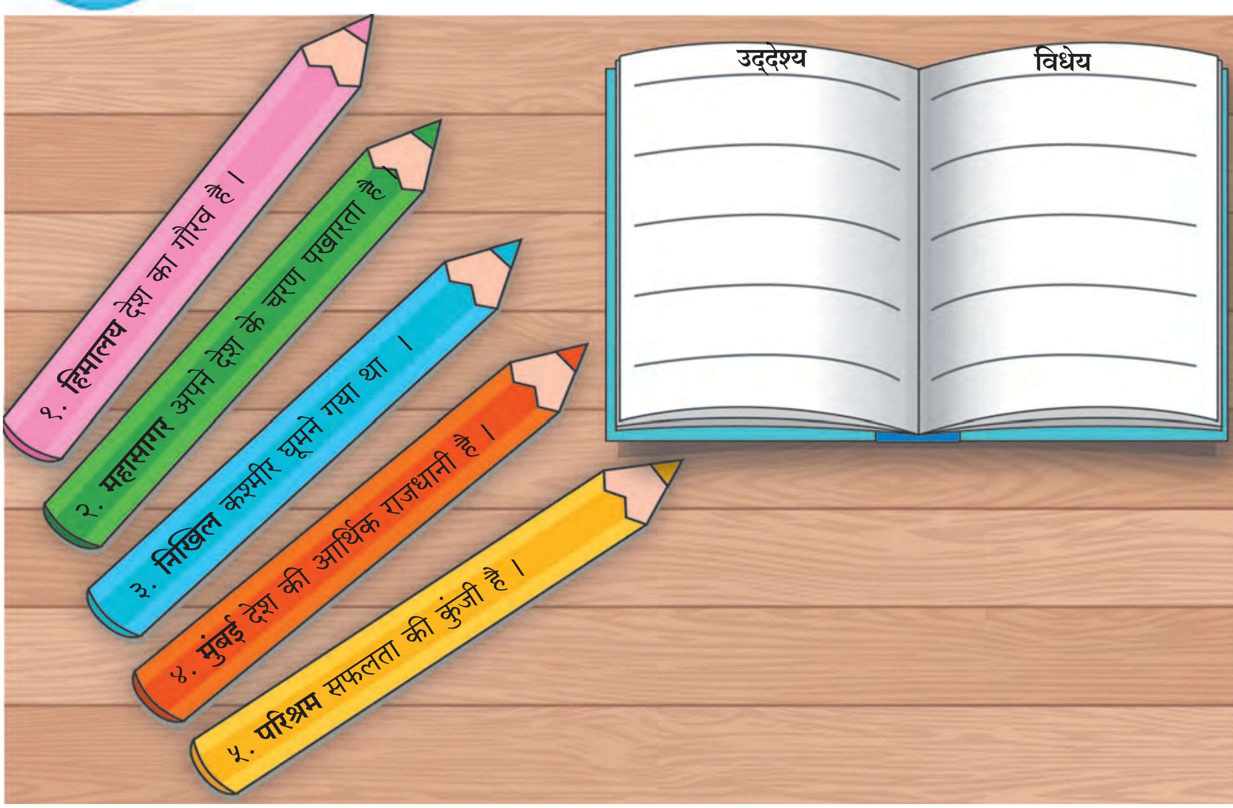

ऊपर के वाक्यों में **हिमालय, महासागर, निखिल, मुंबई, परिश्रम** इनके बारे में कहा गया हैं । वाक्य में जिसके बारे में कहा या बताया जाता है वह **उद्‌देश्य** होता है

ऊपर के वाक्यों में हिमालय के बारे में- **देश का गौरव है,** महासागर के बारे में- **अपने देश के चरण पखारता है,** निखिल के बारे में- **कश्मीर घूमने गया था,** मुंबई के बारे में-**देश की आर्थिक राजधानी है,** परिश्रम के बारे में-**सफलता की कुंजी है-** कहा गया है । उद्‌देश्य के बारे में जो कहा गया है वह **विधेय** है ।

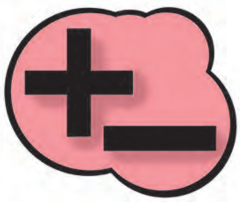

५. (अ) गणित का जादू

१. सर्वप्रथम तुम अपने घर के किसी मोबाइल नंबर का अंतिम अंक लो ।
२. अब उस अंक को दो से गुणा करो ।
३. प्राप्त उत्तर में पाँच जोड़ो ।
४. इस योगफल में पचास से गुणा करो ।
५. प्राप्त उत्तर में १७६६ मिलाओ ।
६. इस योगफल में से अपना जन्म वर्ष (सन) घटाओ ।
७. प्राप्त उत्तर तीन अंकी संख्या होगा । इसमें प्राप्त पहला अंक मोबाइल नंबर का अंतिम अंक होगा । शेष दो अंक तुम्हारी पूर्ण उम्र बताते हैं ।

(ब) पहेली

१. एक नारि ने अचरज किया । साँप मारि पिंजरे में दिया ।
ज्यों-ज्यों साँप ताल को खाए । ताल सूखे साँप मर जाए ।।

२. एक थाल मोती से भरा । सबके सिर पर औंधा धरा ।
चारों ओर वह थाली फिरै । मोती उससे एक न गिरै ।।

३. बाला था जब सबको भाया, बड़ा हुआ कछु काम न आया ।
खुसरो कह दिया उसका नाँव । अर्थ करो नाहिं छोड़ो गाँव ।।

४. अरथ तो इसका बूझेगा । मुँह देखो तो सूझेगा ।।

५. खड़ा भी लोटा पड़ा भी लोटा, है बैठा और कहे लोटा ।
खुसरो कहे समझ का टोटा ।।

६. आदि कटे से सबको पारे । मध्य कटे से सबको मारे ।
अंत कटे से सबको मीठा । खुसरो वाको आँखों दीठा ।।

[दीया-बाती, आकाश, दीया, दर्पण, लोटा, काजल]

❑ पहेलियाँ बुझवाएँ । अन्य पहेलियों का संकलन कराएँ । एक से सौ तक के अंकों का उल्टे क्रम में लेखन कराएँ । पाव, सवा, डेढ़, आधा आदि का प्रयोग करवाएँ । शालेय विषयों से संबंधित अन्य पूरक कृतियाँ करवाएँ । मंच पर पहेलियाँ प्रस्तुत करने के लिए कहें ।

● **सुनो, समझो और पढ़ो :**

(स) अचंभा

– अनिल चतुर्वेदी

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने बच्चों की उत्सुकता, उनकी प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति और प्रकृति की विविधता को दर्शाया है ।

हर चीज में अचंभा, हर बात पर हैरानी
पूछे है बातें न्यारी, नन्ही-सी गुड़िया रानी ।
तितली के सुंदर पंखों पर
रंग किसने बिखराए,
चाँद को शीतलता दी किसने
सूरज को कौन तपाए ?
यहाँ-वहाँ आवारा घूमे
हवा नजर नहीं आती
कुहू-कुहू करके कोयल रानी
किसको गीत सुनाती ?
कौन भर गया चुपके-से मेघों के मुँह में पानी
पूछे है बातें न्यारी, नन्ही-सी गुड़िया रानी ।
फूलों में किसने है छिड़की
खुशबू भीनी-भीनी !
क्यूँ करता रहता है कौआ
सब पर नुक्ताचीनी ?
इंद्रधनुष में क्यूँ नहीं होते
रंग सात से ज्यादा,
कभी-कभी क्यूँ आसमान में
चंदा दिखता आधा
मैडम कहती सिर न खपाओ, बंद करो शैतानी
पूछे है बातें, न्यारी, नन्ही-सी गुड़िया रानी ।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का पाठ करें और विद्यार्थियों से सामूहिक साभिनय पाठ कराएँ । कविता में आए प्रसंगों का नाट्यीकरण कराएँ । शब्दयुग्मों की सूची बनवाएँ । विद्यार्थियों को काल्पनिक प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें ।

● सुनो, समझो और सुनाओ :

६. परिश्रम ही पूजा

इस निबंध में लेखक ने 'परिश्रम ही सफलता की कुंजी है' यह बताते हुए अधिक परिश्रम करने हेतु प्रेरित किया है ।

विचार मंथन

।। श्रम का फल मीठा होता है ।।

परिश्रम ही पूजा है । पूजा तो पूजा ही होती है । पूजा परमात्मा की होती है । इष्टदेव की होती है । इस पर विचार अलग-अलग हो सकते हैं किंतु इसमें दो राय नहीं कि पूजा आलस्यमन नहीं होती । बड़े-बड़े कर्मयोगियों ने कर्म को पूजा माना है । चिंतन की भी राष्ट्र को आवश्यकता होती है परंतु वास्तव में परिश्रम की आवश्यकता इससे कहीं ज्यादा है । बचपन से ही परिश्रम करने का अभ्यास निस्संदेह आपको सफलता की राह पर ले जाता है । यदि आपको आलस्य की आदत पड़ गई तो समझ लीजिए कि आप पतन की ओर जा रहे हैं । दुखों की मार से फिर आपको कोई बचा ही नहीं सकता । कहा गया है-'आलस्यो हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः ।'

सचमुच आलस्य शरीर में ही बसने वाला हमारा सबसे बड़ा शत्रु है । संत कबीर केवल भक्त या संत ही नहीं थे, वे अपने हाथ से कपड़ा भी बुनते थे । वे परिश्रम को ही पूजा मानते थे । परिश्रम शारीरिक ही नहीं होता, मानसिक और बौद्धिक परिश्रम भी होते हैं । परिश्रमी में आत्मविश्वास होता है । उसे मालूम होता है कि परिश्रम का फल मीठा होता है । फल मिलने में देर हो सकती है परंतु परिश्रम निष्फल नहीं हो सकता ।

एक बार एक विद्यालय का परीक्षा परिणाम घोषित किया जा रहा था । एक बालक ने खड़े होकर कहा कि उसका परिणाम घोषित नहीं हुआ । प्रधानाचार्य ने कहा-''जिनके नाम नहीं बोले गए वे उत्तीर्ण नहीं हैं ।'' बालक दृढ़तापूर्वक बोला- ''गुरुदेव ! ऐसा नहीं हो सकता ।'' प्रधानाचार्य ने जोर देकर कहा-''बैठ जाओ! तुम अनुत्तीर्ण हो ।''

विद्यार्थी फिर भी नहीं बैठा तो प्रधानाचार्य ने उसपर पाँच रुपये जुर्माना लगा दिया । विद्यार्थी ने पुनः निवेदन किया तो जुर्माना दस रुपये कर दिया गया । विद्यार्थी फिर भी नहीं बैठा । कक्षाध्यापक ने भी कहा- ''सर ! बालक ठीक कहता है, यह अनुत्तीर्ण नहीं हो सकता । यह पढ़ाई में कठिन परिश्रम करता है । ''

इतने में विद्यालय का बाबू दौड़ा-दौड़ा आया और क्षमा माँगते हुए बोला-''सर, टाइप होने में एक नाम छूट गया था ।'' वह नाम उसी परिश्रमी छात्र का था और उसके अंक भी सर्वाधिक थे । वह बालक और कोई नहीं बल्कि राजेंद्र प्रसाद थे, वही राजेंद्र प्रसाद

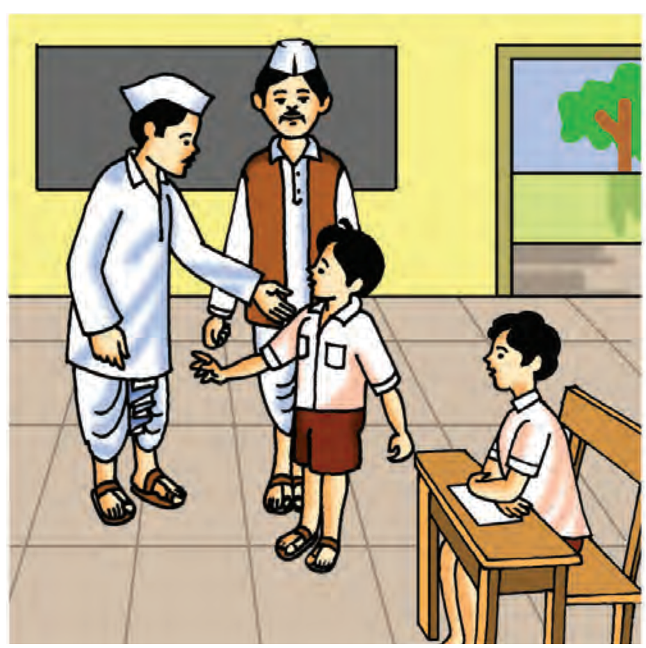

❑ किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से पाठ का मुखर वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से पाठ के मुद्दों पर चर्चा कराएँ । उनके बचपन के प्रसंग सुनाने के लिए कहें । निबंध के मुद्दे देकर लेखन के लिए प्रोत्साहित करें ।

वाचन जगत से

गणतंत्र दिवस पर सम्मानित बच्चों के बहादुरी के प्रसंग पढ़ो और पसंदीदा एक का वर्णन करो ।

https://india.gov.in

जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया । आगे चलकर भारत के प्रथम राष्ट्रपति चुने गए ।

× × × × × ×

व्याकरण के आचार्य कैयट दिनभर आजीविका के लिए परिश्रम करते और रात्रि को जागकर व्याकरण लिखा करते । इससे उनका स्वास्थ्य गिरने लगा । उनकी पत्नी ने आग्रह किया-''आप समाज के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं । घर का खर्च चलाने की चिंता आप मुझपर छोड़ दीजिए ।'' परिश्रमी व्याकरणाचार्य अपनी पत्नी से बोले -''तुम घर कैसे चलाओगी?'' वह भी घोर परिश्रमी थी । ''आश्रम की सीमा पर खड़े कुश की मैं रस्सियाँ बनाऊँगी । आप एक दिन जाकर साप्ताहिक बाजार में बेच आइएगा । घर का खर्च इसी से चल जाएगा । आप व्याकरण की रचना के लिए अधिक समय निकाल सकेंगे ।''आचार्य कैयट ने पत्नी की बात स्वीकार की । वैयाकरण कैयट बोले-''वाह! तुमने तो बता दिया कि परिश्रम ही पूजा है । श्रम से ही जीवन में सब साध्य होता है । अब तो शीघ्र सफलता मिलेगी ।'' आगे चलकर उन्होंने अद्‌भुत व्याकरण की रचना की । यह पुस्तक आगे चलकर विद्‌यार्थियों के लिए पथ प्रदर्शक का काम करने लगी ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

राय = सलाह, अभिप्राय

निस्संदेह = बिना किसी आशंका के

जुर्माना = आर्थिक दंड

कुश = एक प्रकार की घास

वैयाकरण = व्याकरण के जानकार

मुहावरा

घर चलाना = घर का खर्च उठाना

अध्ययन कौशल

सुने हुए नए शब्दों की वर्णक्रमानुसार तालिका बनाकर संभाषण एवं लेखन में प्रयोग करो ।

स्वयं अध्ययन

सौरऊर्जा पर टिप्पणी तैयार करो और पढ़ो :

सौरऊर्जा

महत्त्व   प्रयोग

www.seci.gov.in

सुनो तो जरा

अपने पसंदीदा विषय पर चार पंक्तियों में कविता बनाओ और सुनाओ ।

मेरी कलम से

अपने परिवार में घटित कोई हास्य प्रसंग अपने शब्दों में लिखो ।

*** किसने, किससे, क्यों कहा है ? लिखो :**

(क) ''सर, टाइप होने में एक नाम छूट गया था ।''

(ख) ''गुरुदेव ! ऐसा नहीं हो सकता ।''

(ग) ''घर का खर्च चलाने की चिंता आप मुझपर छोड़ दीजिए ।''

(घ) ''वाह ! तुमने तो बता दिया कि परिश्रम ही पूजा है ।''

भाषा की ओर

पढ़ो, समझो और करो :

() छोटा कोष्ठक, [] बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक, {} मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक, ^ हंसपद

छोटा कोष्ठक ()
क्रमसूचक अक्षर, अंक, संवादमय लेखों में हावभाव सूचित करने के लिए () इसका प्रयोग करते हैं ।

बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक []
लेखन में त्रुटि या पूर्ति बताने, दूसरे कोष्ठक को घेरने के लिए [] इसका प्रयोग करते हैं ।

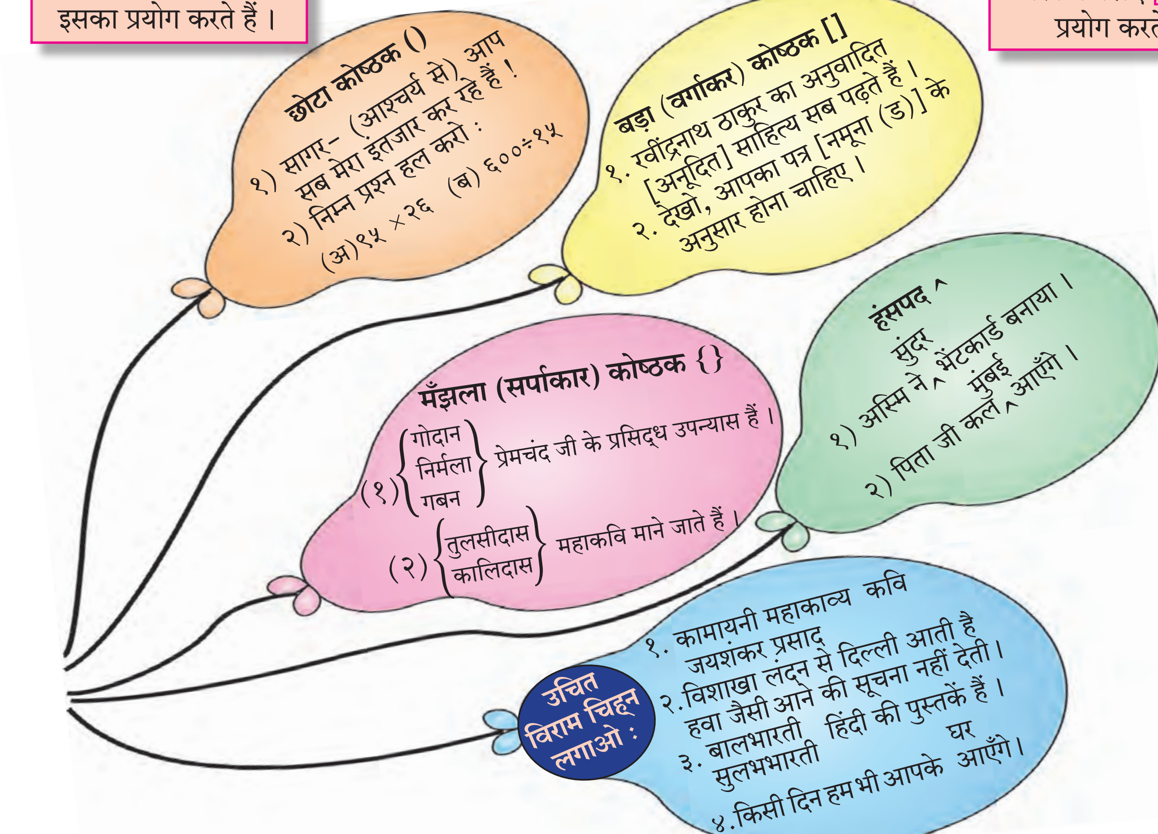

मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक {}
एक साधारण पद से संबंध रखने वाले अलग-अलग पंक्तियों के शब्दों को मिलाने के लिए {} इसका प्रयोग करते हैं ।

LEXSX2

हंसपद ^
लेखन में जब कोई शब्द छूट जाता है तब उसे पंक्ति के ऊपर लिखकर ^ यह चिह्न लगाते हैं ।

● सुनो, पढ़ो और गाओ :

७. कुछ पाकर देख

-बुद्‌धिनाथ मिश्र

जन्म : १ मई १९४९, देवघा, समस्तीपुर (बिहार) । **रचनाएँ :** जाल फेंक रे मछेरे, शिखरिणी, जाड़े में पहाड़, नवगीत दशक आदि ।
परिचय : बुद्‌धिनाथ मिश्र जी को अनेक सम्मान-पुरस्कार प्राप्त हुए हैं । वे गीतकार, लेखक तथा काव्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं।
प्रस्तुत कविता में कवि ने कुछ खोने-पाने, सपनों को सुलटाने, मन के दिए जलाकर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया है ।

स्वयं अध्ययन

निम्नलिखित शब्दों से संबंधित सुनी हुई कोई कविता सुनाओ :
जैसे- चाँद, लड़की, घर, दिया ।

कुछ खोकर, कुछ पाकर देख ।
दुनिया नई बसाकर देख ।
मौसम कदमों पर होगा
गैरों को अपनाकर देख ।
काँटे खुलकर हँस देंगे
बहलाकर, सहलाकर देख ।
मैं भी कितना हूँ तनहा
यह तू मुझमें आकर देख ।
लड़की लाड़ली लड़की है
चाँद-सितारे लाकर देख ।
सपने ही तो साथी हैं
सपनों को सुलटाकर देख ।
सारा जंगल जिंदा है
तू बादल बरसाकर देख ।
लौट के बिछड़े आएँगे
घर की राह सजाकर देख ।
'नाथ' अँधेरे को मत कोस
मन का दिया जलाकर देख ।

LF71YP

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता सुनाएँ । विद्यार्थियों से कविता का व्यक्तिगत, सामूहिक, गुट में गायन करवाएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता के भाव स्पष्ट करें । कविता की कौन-सी पंक्ति उन्हें अच्छी लगी, पूछें एवं कारण बताने हेतु प्रेरित करें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

गैर = पराये

तनहा = अकेला

कोसना = भला-बुरा कहना

खोजबीन

चाँद पर पहुँचने वाले प्रथम अंतरिक्ष यात्री का यात्रावर्णन ढूँढ़ो और सुनाओ ।

अध्ययन कौशल

विद्‍यालय के पाँचवीं से आठवीं कक्षाओं के छात्र और छात्राओं की संख्या संयुक्त स्तंभालेख द्‌वारा दर्शाओ।

गणित सातवीं कक्षा पृ. ५१-५२

बताओ तो सही

'स्वंय को बदलो, समाज बदलेगा', इस विषय पर चर्चा करो और बताओ ।

*** कविता की पंक्तियों का अर्थ लिखो :**

(क) सारा जंगल --------------------
-------- --------- सजाकर देख ।

(ख) मौसम --------------------
-------- --------- सहलाकर देख ।

भाषा की ओर

दाएँ पंख में उपसर्ग तथा बाएँ पंख में प्रत्यय लगाकर शब्द लिखो तथा उनके वाक्य बनाओ :

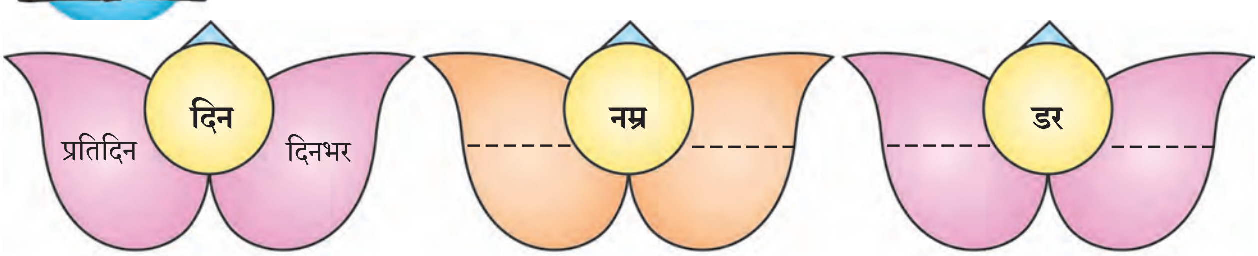

मैं प्रतिदिन खेलता हूँ । ---------------------- ----------------------

दिनभर नहीं खेलना चाहिए । ---------------------- ----------------------

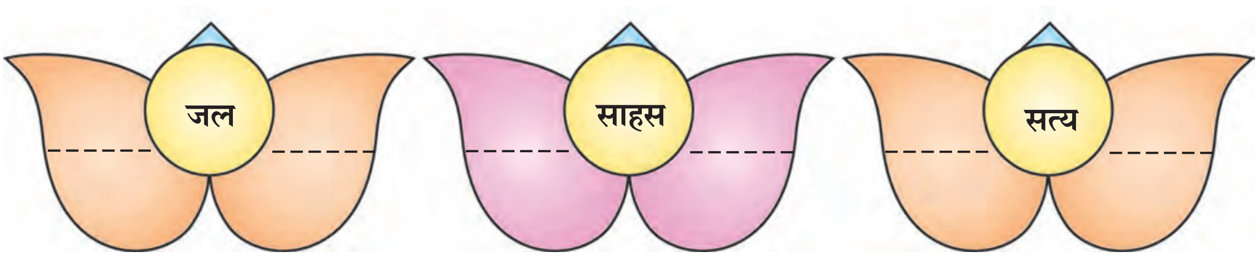

-------------------- -------------------- --------------------

-------------------- -------------------- --------------------

अभ्यास – १

* चित्र देखकर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि के भेदों के आधार पर वाक्य बनाओ और तालिका में शब्द लिखो :

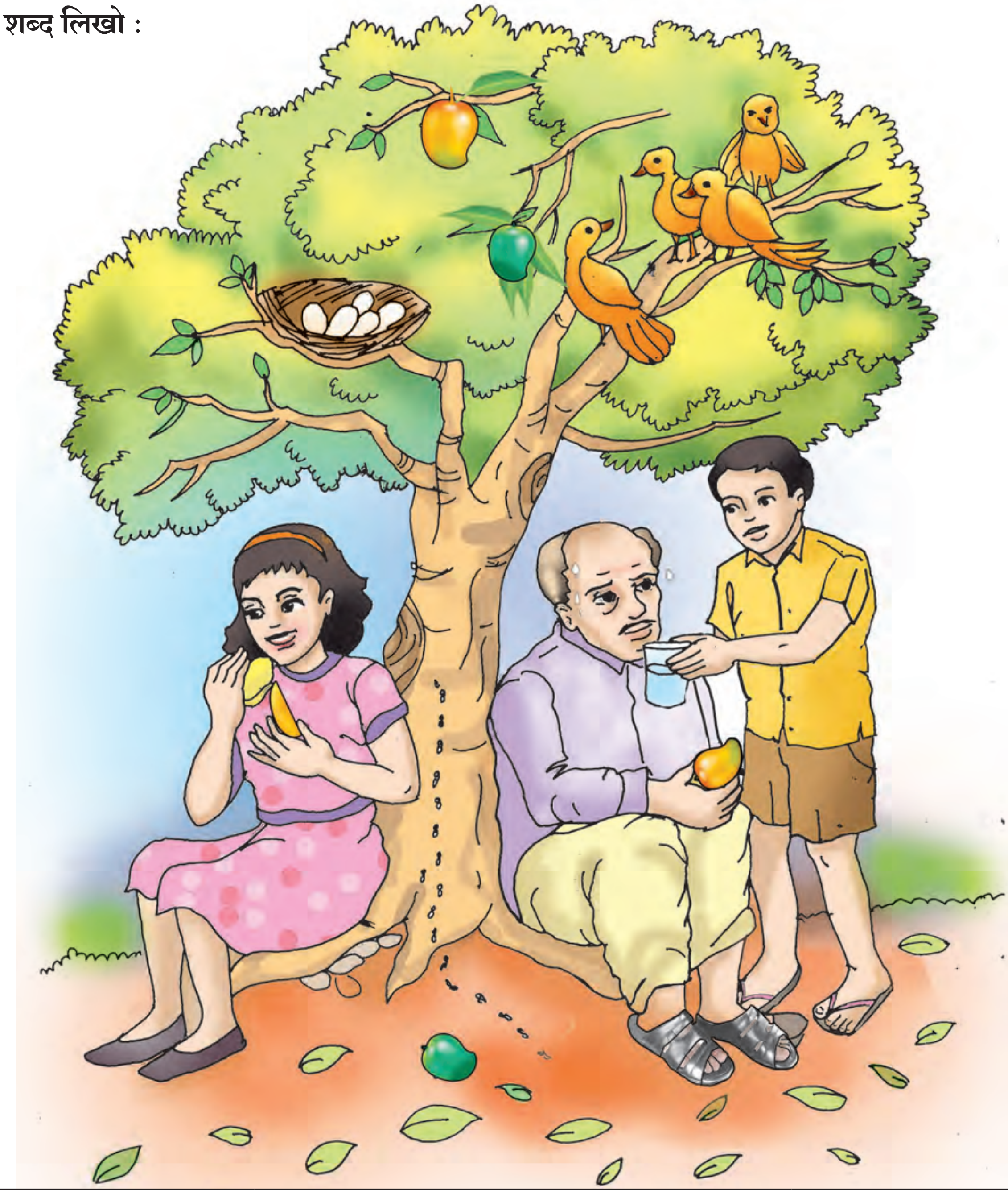

संज्ञा शब्द	सर्वनाम शब्द	विशेषण शब्द	क्रिया शब्द

पुनरावर्तन – १

१. शब्दों की अंत्याक्षरी खेलो: जैसे– शृंखला ..... लालित्य ..... यकृत ..... तरुवर ..... रम्य ..... ।

२. निम्न प्रकार से मात्रा एवं चिह्न वाले अन्य शब्द बताओ :

काला	बुलबुल	कृपाण	केले	प्रातः
रूमाल	नूपुर	खपरैल	खरगोश	लीची
चौदह	हृदय	चौकोर	पतंग	कुआँ
चिड़िया	पैसे	तितली	संख्याएँ	डॉक्टर

३. पूरी वर्णमाला क्रम से पढ़ो :

क्ष श य प त ट च क ए अ ञ ष र फ

थ ठ छ ख ऐ आ ज्ञ स ल ब घ ढ़ ई ऋ

द ड ज ग ओ इ श्र ह व भ ध ढ झ ऑ

ळ म न ण त्र ङ अं उ ड़ अः ऊ अँ औ

४. अपने विद्यालय में आयोजित अंतरशालेय चित्रकला प्रदर्शनी का विज्ञापन बनाकर लिखो ।

उपक्रम

प्रतिदिन श्यामपट्ट पर सुंदर एवं सुडौल अक्षरों में हिंदी सुविचार लिखो ।

उपक्रम

प्रतिसप्ताह समाचारपत्र के मुख्य समाचारों का लिप्यंतरण करो और पढ़ो ।

उपक्रम

प्रतिमाह अपनी मातृभाषा के पाँच वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करो और सुनाओ ।

प्रकल्प

अपने पसंदीदा विषय पर आधारित व्यक्तिगत अथवा गुट में प्रकल्प तैयार करो ।

● **पहचानो, समझो और बताओ :**

१. अस्पताल

❑ चित्र का निरीक्षण कराके विद्‌यार्थियों से शब्द, वाक्य पर चर्चा करें । अस्पताल में जाकर वहाँ दी गई जानकारी, सूचना पढ़ने एवं पालन करने के लिए कहें । दिए गए कक्ष और वहाँ के कार्यों के बारे में बताएँ । उनको चित्र के बारे में एक–दूसरे से प्रश्न पूछने के लिए कहें ।

● **सुनो, पढ़ो और गाओ :**

२. सब चढ़ा दो वहाँ

– डॉ. विष्णु सक्सेना

जन्म : १२ जनवरी १९५९,सहादतपुर(उ.प्र.) । **रचनाएँ :** मधुबन मिले न मिले, आस्था का शिखर, स्वर एहसासों के, खुशबू लुटाता हूँ मैं आदि ।
परिचय : विष्णु सक्सेना जी की कृतियों को विविध पुरस्कार प्राप्त हुए हैं । मंचीय कवियों में आपका नाम सम्मान के साथ लिया जाता है ।
प्रस्तुत रचना में गीतकार ने हर स्थिति में दूसरों को सुख पहुँचाने, परोपकार करने एवं माता-पिता के सर्वोच्च स्थान को दर्शाया हैं।

बताओ तो सही

तुम्हें जीवन में अपने दोस्तों और पड़ोसियों से क्या प्रेरणा मिली, बताओ ।

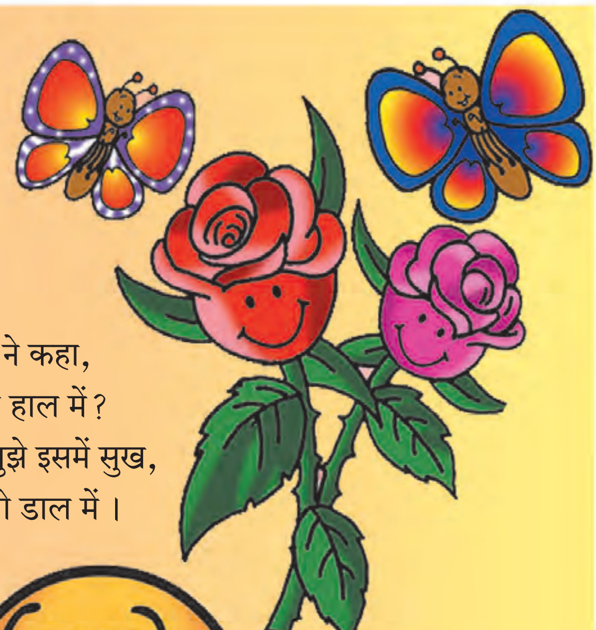

एक दिन फूल से तितलियों ने कहा,
कैसे रहते हो खुश तुम हरेक हाल में ?
फूल बोला कि खुशबू लुटाता हूँ मैं,
जब कि रहता हूँ काँटों के जंजाल में ।।
एक दिन फूल से ....

एक दिन पेड़ से पंछियों ने कहा,
मस्त रहते हो कैसे हरेक हाल में ?
पेड़ बोला कि मिलता मुझे इसमें सुख,
बाँट देता हूँ जो फल लगे डाल में ।
एक दिन फूल से....

एक दिन ओंठ से आँख ने ये कहा,
मुस्करा कैसे लेते हो हरेक हाल में;
ओंठ बोले, ''है कोशिश किसी आँख से,
कोई आँसू न आए नये साल में ।''
एक दिन फूल से....

एक दिन मैंने पूछा सृजनहार से !
आप से भी बड़ा कौन इस काल में ?
बोले, ''माँ-बाप से है न कोई बड़ा,
सब चढ़ा दो वहाँ, जो रखा थाल में ।''
एक दिन फूल से....

LFPT2Z

❑ कविता का आदर्श पाठ प्रस्तुत करके विद्यार्थियों से सस्वर गायन कराएँ । गुट चर्चा एवं प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता में आए प्रमुख भावों को स्पष्ट करें । विद्यार्थी माँ द्वारा दिए गए कौन-कौन-से निर्देशों का पालन करते हैं, प्रत्येक से अलग-अलग पूछें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द
हरेक = प्रत्येक
जंजाल = झंझट, बखेड़ा, उलझन
सृजनहार = सृष्टि निर्माता
काल = समय

खोजबीन

कृत्रिम उपग्रहों से होने वाले लाभ, उपयोग ढूँढ़ो और सुनाओ ।

सुनो तो जरा

प्रसार माध्यम से शिक्षाप्रद कार्यक्रम सुनो और सुनाओ ।

✲ अपने शब्दों में लिखो :
(क) फूल हर हाल में क्यों खुश रहता है ?
(ख) आँख ने ओठों से क्या पूछा ?

सदैव ध्यान में रखो

पेड़, पौधे, मानव, पशु, पक्षी आदि के साथ दयाभाव रखना चाहिए ।

भाषा की ओर

नीचे दिए गए वाक्य पढ़ो और उपयुक्त शब्द उचित जगह पर लिखो :

समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द

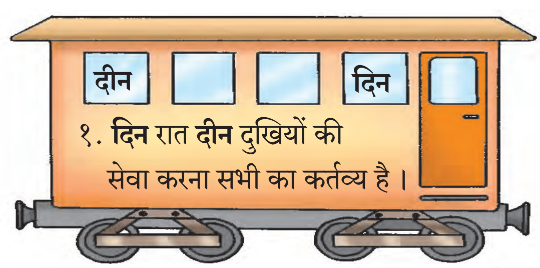

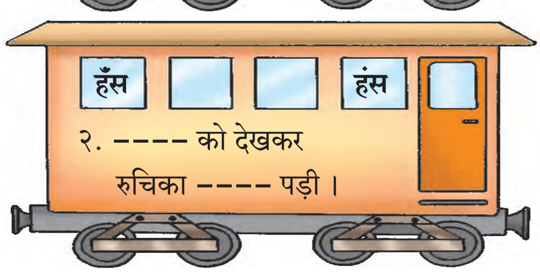

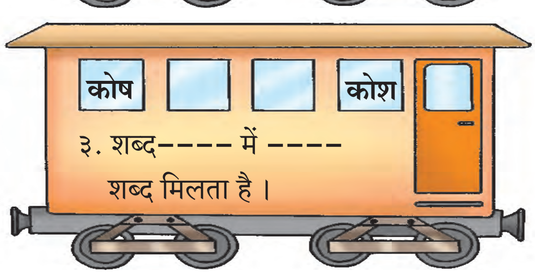

शब्द युग्म (·········– गाँव, घूमना – ·········)

कूड़ा – करकट

६. बच्चों ने मैदान पर फैला कूड़ा – करकट इकट्ठा किया ।

------ – ------

२. सेहत के लिए -------------- अच्छा होता है ।

------ – ------

४. अंतरजाल की सुविधा ---------- में उपलब्ध है ।

● सुनो, समझो और पढ़ो :

३. अलग अंदाज में होली

– पवन चौहान

जन्म : ३ जुलाई १९७८, मंडी (हिमाचल प्रदेश) । **रचनाएँ :** किनारे की चट्टान (कविता संग्रह) विभिन्न कहानियाँ, लेख आदि ।
परिचय : पवन चौहान जी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित लिखते रहते हैं । बालसाहित्य में आपका उल्लेखनीय योगदान है ।
प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने 'बुजुर्गों' की समस्याएँ और उनके प्रति सद्‌व्यवहार पर प्रकाश डाला है ।

वाचन जगत से

अपने पड़ोसी राज्यों में होली किस प्रकार मनाई जाती है ? अंतरजाल/पुस्तकों से जानकारी प्राप्त करो और बताओ।

- राज्य का नाम
- मनाने की विधि
- व्यंजन विशेष

होली का त्योहार नजदीक था । मुहल्ले के बच्चे इस बार त्योहार को नए तरीके से मनाने के लिए इकट्ठे हुए । किसी ने कहा, 'इस बार हम डीजे के साथ थिरकते हुए होली मनाएँगे ।' कोई बोली, 'इस बार हम रसायनवाले रंगों का त्याग करेंगे ।' सभी की बातें सुनने के बाद शालिनी बोली, ''मैं सोचती हूँ, इस बार हम कोई अच्छा काम करते हुए होली मनाए ।''

''वह कैसे?'' सबने पूछा । शालिनी ने कहा, ''इस बार की होली का त्योहार शहर के वृद्‌धाश्रम में मनाएँ तो कैसा रहेगा ? वहाँ सभी बुजुर्ग अपने बुढ़ापे में छोटी-छोटी खुशियाँ तलाशने की कोशिश में रहते हैं। उनके अपने वहाँ उनको बेसहारा छोड़कर चले गए होते हैं, जो मुझे बड़ा ही दुखदायी लगा । कितना अच्छा होगा कि होली का त्योहार हम उनके साथ मनाएँ । उन्हें इससे ढेर सारी खुशियाँ मिलेंगी और इस त्योहार में वे अपनों की कमी भी महसूस नहीं करेंगे । हमें भी उनसे इस दौरान बहुत सारी अच्छी बातें सीखने को मिलेंगी ।'' शालिनी की बात का सभी ने समर्थन किया ।

बच्चे इस बार की होली के लिए बहुत उत्सुक दिख रहे थे । उन्होंने तैयारियाँ कर ली थीं । इसके लिए उन्होंने वृद्‌धाश्रम से अनुमति भी ले ली थी ।

होली का दिन आ गया । बच्चे रंगों के साथ वृद्‌धाश्रम पहुँचे । वृद्‌धों को नमस्कार किया और सबके हाथ में रंग की एक-एक थैली पकड़ा दी । थैलियाँ हाथ में आते ही वृद्‌धों में जैसे एक नई स्फूर्ति आ गई । वे इस मौके का कई दिनों से इंतजार कर रहे थे । उन्होंने 'होली है...' के शोर के साथ उनपर रंगों की बरसात की । आज जाने कितने वर्षों के बाद इस आश्रम में खुशी का माहौल देखने को मिल रहा था । बुजुर्ग आज सचमुच ही अपने सारे दुख भूल गए थे ।

रंगों का यह खेल काफी देर तक चलता रहा । जब सारे थक गए तो वे वृद्‌धाश्रम के छोटे-से पार्क में बैठ गए । थोड़ी देर सुस्ताने के उपरांत सबने भोजन किया । भोजन के बाद बुजुर्गों ने सभी बच्चों को अपनी जिंदगी के हँसी-मजाक के किस्से सुनाए और उनका खूब मनोरंजन किया । उन्होंने कहा, ''इस अंदाज की होली सदा याद रहेगी ।'' बच्चों ने भी बुजुर्गों को गीत, कविता के साथ नृत्य-गान करके खूब आनंदित किया । आज

❑ किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से एकल, सामूहिक मुखर वाचन कराएँ । प्रश्नोतर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ का आशय स्पष्ट करें । किसी एक परिच्छेद का श्रुतलेखन कराके एक-दूसरे से जाँच कराएँ ।

मेरी कलम से

किसी भी त्योहार पर मुद्‌दों के आधार पर निबंध लिखो : प्रस्तावना, महत्व, कब, क्यों, कैसे, उपसंहार ।

वृद्‌धाश्रम का माहौल ऐसा था, जैसा आज तक यहाँ कभी नहीं देखा गया । बचपन और बुढ़ापा आज एक मंच पर बैठकर खूब मस्ती कर रहे थे ।

एक बुजुर्ग ने कहा, ‘‘बच्चों ने आज हमें खुशी के वे पल दिए हैं जो हमारे अपनों ने हमसे कब के छीन लिए थे । ये बच्चे समझदार और अच्छी सोच रखने वाले इनसान हैं । बच्चों में यह लौ जलती रहनी चाहिए । यह अब आप लोगों की जिम्मेदारी है । यही वह लौ है, जो आने वाले वक्त में ऐसी संस्कारवान पीढ़ी का निर्माण करेगी जो इन वृद्‌धाश्रमों को भरने से रोक पाएगी और बुजुर्ग अपनी अंतिम साँझ को अपनों के साथ इसी तरह से हँसी-खुशी गुजार पाएँगे ।’’

बुजुर्ग की बातों को सभी बच्चों ने गाँठ बाँध लिया । उन्होंने मन-ही-मन अपने आप से ऐसे समाज के निर्माण का वादा कर लिया था जहाँ बुजुर्गों के साथ पूरा न्याय हो सकेगा और वे अपनी जिंदगी के आखिरी दिन अपनों के साथ हँसी-खुशी बिता सकेंगे ।

शाम होने को थी । अब बच्चों ने घर वापसी के लिए बुजुर्गों से आज्ञा माँगी । बुजुर्गों ने सोचा न था कि खुशी के ये पल इतनी जल्दी बीत जाएँगे लेकिन समय काफी हो चुका था । वे अब उनको ज्यादा समय तक नहीं रोक सकते थे । जाने से पहले बुजुर्गों ने सब बच्चों को कॉपी और पेन भेंट किए । बच्चे फूले न समाए ।

बच्चे वृद्‌धाश्रम के गेट से बाहर निकल रहे थे । उन्हें जाते देख बुजुर्गों की आँखें भरती जा रही थीं । वे इन नन्हे फरिश्तों का तहे दिल से शुक्रिया अदा कर रहे थे । गैर होते हुए भी उन्हें अपनों-सा प्यार, ढेर सारी खुशियाँ दीं । बच्चे मस्ती में नाचते, गाते जब अपनी बस्ती में पहुँचे तो सभी मुहल्लेवासियों ने शालिनी और उसकी टीम का तालियों के साथ जोरदार स्वागत किया । वे अपने बच्चों द्‌वारा किए गए इस नेक कार्य पर गर्व महसूस कर रहे थे । सचमुच, यह एक नए प्रकार की होली थी, जो एक सकारात्मक सोच के साथ संपन्न हुई ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

बुजुर्ग = वृद्‌ध
समर्थन = सहमति
माहौल = वातावरण
लौ = ज्योति
साँझ = शाम
नेक = अच्छा

मुहावरे

गाँठ बाँध लेना = प्रण कर लेना
फूला न समाना = आनंदित होना

खोजबीन

कृत्रिम तथा प्राकृतिक रंगों संबंधी जानकारी पढ़ो ।

- कृत्रिम रंगों का कच्चा माल
- प्राकृतिक रंगों का कच्चा माल

विचार मंथन

।। उत्सव, पर्व मनाएँ, भेद-भाव भूल जाएँ ।।

अध्ययन कौशल

संदर्भस्रोतों की जानकारी प्राप्त करो और उनकी सूची बनाकर सुनाओ ।

✲ टिप्पणियाँ लिखो :

(क) वृद्धाश्रम में जाकर होली मनाने के कारण

(ख) बुजुर्गों के बच्चों के बारे में विचार

(ग) बुजुर्गों की बातों का बच्चों पर प्रभाव

(घ) शालिनी और उसकी टीम का स्वागत

सदैव ध्यान में रखो

सदैव विनम्र शब्दों में ही निवेदन करो ।

भाषा की ओर

निम्नलिखित वाक्य पढ़ो और मोटे और ( ) में छपे शब्दों पर ध्यान दो :

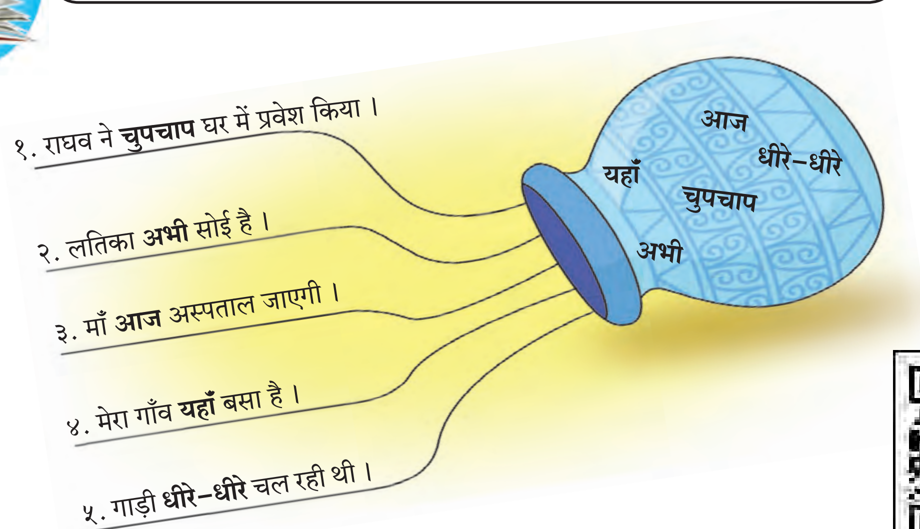

उपर्युक्त वाक्यों में **चुपचाप, अभी, आज, यहाँ, धीरे-धीरे** ये शब्द क्रमशः प्रवेश करना, सोना, जाना, बसना, चलना इन क्रियाओं की विशेषता बताते हैं । ये शब्द **क्रियाविशेषण अव्यय** हैं ।

१. नागपुर से रायगढ़ (की ओर) गए ।

३. जन्म (के बाद) मामी जी ने मुझे गोद ले लिया ।

२. ताकत (के लिए) संतुलित आहार आवश्यक है ।

४. जलाशय चाँदी (की भाँति) चमचमा रहा था ।

५. शौनक बड़ी बहन (के साथ) विद्यालय जाने की तैयारी में लग गया।

उपर्युक्त वाक्यों में **की ओर, के लिए, के बाद, की भाँति, के साथ** ये क्रमशः नागपुर और रायगढ़, ताकत और संतुलित आहार, जन्म और मामी जी, जलाशय और चाँदी, बड़ी बहन और विद्यालय इनके बीच संबंध दर्शाते हैं । ये शब्द **संबंधबोधक अव्यय** हैं ।

● **सुनो, समझो और पढ़ो :**

४. सोनू हाथी

– उमाकांत खुबालकर

जन्म : ७ अक्तूबर १९५३, नागपुर (महाराष्ट्र) **रचनाएँ :** १०८ बार, एक था सुब्रतो, पेपरवाला, रुकती नहीं नदी, व्यतिक्रम, तिर्यक रेखा ।
परिचय : उमाकांत जी ने प्रचुर मात्रा में बालसाहित्य लिखा है । आप आकाशवाणी और वैज्ञानिक तथा शब्दावली आयोग से जुड़े रहें ।
प्रस्तुत एकांकी पशुओं के प्रति प्रेम तथा दयाभाव को जगाती है ।

स्वयं अध्ययन

रूपरेखा के आधार पर कोई कहानी लिखो ।

दृश्य १

(जंगल में लकड़हारा पेड़ काट रहा है । कुल्हाड़ी के वार से आहत हो पेड़ दर्द से कराहता है ।)

पेड़ : लकड़हारे भाई ! मुझे मत काटो । मैं आप सबके काम आनेवाला हूँ ।

विश्वास : मेरे बच्चे भूखे हैं । मैं क्या करूँ ? तुम्हारी लकड़ी काटकर बाजार में बेचूँगा, चार पैसे मिलेंगे । तभी चूल्हा जलेगा । बच्चों का कष्ट देखा नहीं जाता ।

पेड़ : **(भयभीत होकर)** नहीं–नहीं । रुक जाओ भाई । क्या पूरा काट डालोगे मुझे ? मैं भी तुम्हारे बेटे जैसा हूँ ।

विश्वास : ओफ ओ, बेटे का नाम ले लिया । मैं तुम्हें नहीं काट सकता । आज घर में चूल्हा नहीं जलेगा ।

पेड़ : तुमने इनसानियत दिखाई । चलो इनसानियत की इस बात पर तुम्हें एक अनोखा उपहार देता हूँ ।

विश्वास : **(खुश होकर)** कहते हैं न अंधे को आँख और भूखे को खाना इससे ज्यादा और क्या चाहिए ।

पेड़ : **(पार्श्व में नन्हे हाथी के चिंघाड़ने का स्वर गूँजता है ।)** ये नन्हा हाथी अपने परिवार से बिछड़ गया है । इसे तुम अपने साथ ले जाओ । यह बीमार है बेचारा, आठ दिनों से भूखा है ।

विश्वास : **(चौंककर)** क्या कहा ? इसको अपने साथ ले जाऊँ ? यहाँ तो अपने रहने का ठौर–ठिकाना नहीं है , इसे कहाँ रखूँगा ? क्या खिलाऊँगा ? और डॉक्टर को पैसे कहाँ से दूँगा ?

पेड़ : मेरी बात मानकर इसे अपने साथ ले जाओ । तुम्हारे काम अवश्य आएगा ।

विश्वास : यह कैसी सौदेबाजी है ? घर ले जाकर इसका क्या अचार डालूँगा ?

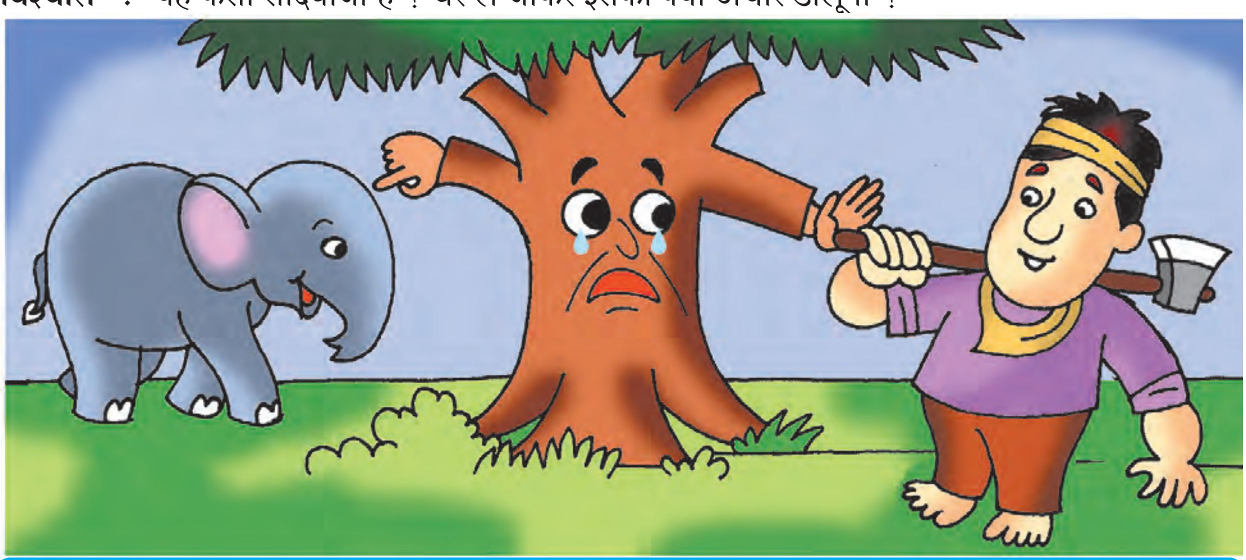

❑ उचित आरोह–अवरोह के साथ विद्‌यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । एकांकी के प्रमुख मुद्दों को प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से स्पष्ट करें । अच्छे इनसान में क्या–क्या गुण होने चाहिए पूछें। किसी नियत विषय पर भाषण देने के लिए कहें ।

सुनो तो जरा

पाठ में आए हुए मूल्यों को सुनो और सुनाओ ।

पेड़ : भई, मैं कई जगह से कटा हुआ हूँ । अब आँधी-तूफान में कैसे बचूँगा ? इसे अपने पास नहीं रख सकता । क्या यह तुम्हारा बेटा नहीं बन सकता ? क्या यह तुम्हारा प्यार नहीं पा सकता ?

विश्वास : ठीक कहते हो । तुम्हें काटकर मैंने बहुत बड़ा अपराध किया है । अब दुबारा यह काम नहीं करूँगा। कोई-न-कोई रास्ता निकल आएगा । आज से मैं इसे सोनू कहूँगा । इसे देखकर बच्चे खुश होंगे ।

दृश्य २

(घर के आँगन में नन्हा हाथी और विश्वास खड़े हैं । सोनू स्वभाववश चिंघाड़ता है । सुमित्रा दरवाजा खोलकर बाहर आती है । पति के साथ नन्हे हाथी को देखकर चौंक पड़ती है ।)

विश्वास : **(सोनू से)** सोनू ये है तुम्हारी माता जी ।

सुमित्रा : **(झल्लाते हुए)** ये क्या देख रही हूँ ? घर में नहीं हैं दाने अम्मा चली भुनाने ! किसको पकड़ लाए हो ? घर में दो बच्चे हैं, उनकी चिंता नहीं है तुम्हें? इसको भी ले आए। कहाँ रखोगे, क्या खिलाओगे ?

विश्वास : कुछ भी कह देती हो ? अब लौटा नहीं सकता । अपने हिस्से की आधी रोटी खिलाऊँगा इसे ।

दृश्य ३

(सोनू के चिंघाड़ने का स्वर उभरता है । विश्वास को बीमार और दुखी पाकर खूँटा तोड़कर घर के अंदर आने का प्रयास करता है।)

विश्वास : **(खुशी से)** आ जा मेरे लाड़ले, तेरे पास आते ही कलेजे में ठंडक पहुँच रही है । मुझे बड़ा दुख है कि मैं तुम्हारे लिए ज्यादा कुछ नहीं कर पा रहा हूँ ।

सुमित्रा : **(गुस्से से)** मैं तुम्हें इसे .... घर में नहीं रहने दूँगी।

विश्वास : ऐसा मत कहो । देखती नहीं यह कितना समझदार हो गया है । मुझे बीमार देखकर मेरे पास दौड़ा चला आया । अब तो बच्चे भी इसे पसंद करने लगे हैं ।

सुमित्रा : **(सिसकती हुई)** मैं इसकी दुश्मन थोड़े ही हूँ । मुझे अफसोस इस बात का है कि इसे भी अपने साथ भूखा रहना पड़ रहा है । घर में फूटी कौड़ी नहीं है । कहाँ से दाना-पानी जुटाऊँ ?

विश्वास : यही तो जिंदगी है भागवान । इनसान को खूब लड़ना पड़ता है । चल बेटा सोनू बाहर चल, तुझे कुछ

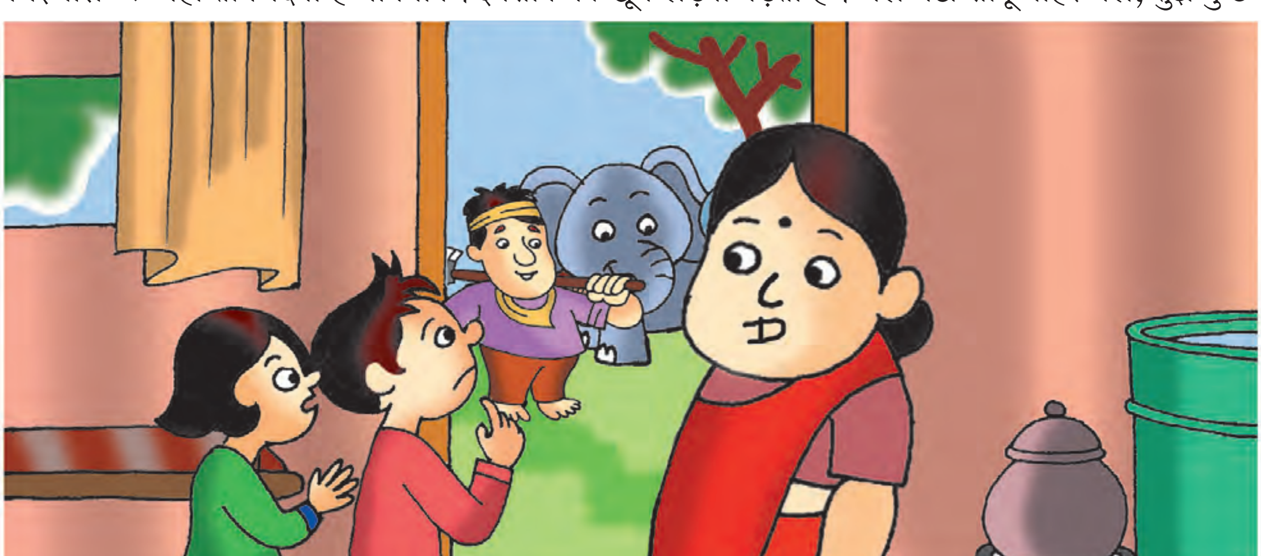

जरा सोचो .... लिखो

यदि तुम्हें भी कोई हाथी का बच्चा मिल जाए तो ...

खिला-पिलाकर लाता हूँ । तेरे लिए दवा ले आता हूँ ।

सुमित्रा : नहीं ? मैं तुम्हें इस बीमार हालत में बाहर नहीं जाने दूँगी । मैं ही सोनू को खिलाती-पिलाती हूँ ।

विश्वास : **(कुछ सोचकर)** सुना है, पड़ोस के गाँव में बहुत बड़ा मेला लगा है । सोनू को भी साथ ले जाऊँगा । गाँववाले इसे केले और गन्ने खिलाएँगे । **(सोनू विश्वास की बात समझकर स्वीकृति में सिर हिलाता है ।)**

सुमित्रा : मैं भी चलूँगी साथ में । बच्चे भी चलेंगे । **(वह सोनू के गले लिपट जाती है ।)**

बड़ा बेटा : पिता जी, सोनू के ठीक हो जाने पर हम उसे उसके असली घर जंगल में छोड़ देंगे ।

मैंने समझा

वाचन जगत से

स्वामी विवेकानंद का कोई भाषण पढ़ो ।

शब्द वाटिका

नए शब्द

पार्श्व = पीछे

ठौर-ठिकाना = सुरक्षित रहने का स्थान

सौदेबाजी = मोल-भाव की क्रिया

कलेजा = हृदय

मुहावरे

फूटी कौड़ी न होना = कुछ भी न होना

अफसोस होना = दुखी होना

कहावतें

अंधे को आँख और भूखे को खाना = जरूरतमंद को जरूरत की चीज मिलना

घर में नहीं दाने अम्मा चली भुनाने = पैसों के अभाव में भी बड़ा काम करने की तैयारी

विचार मंथन

।। वृक्षवल्ली आम्हां सोयरे वनचरे ।।

खोजबीन

अपने आस-पास के वृक्षों के नामों का पत्तों के आकारानुसार वर्गीकरण करो ।

छोटे	मध्यम	बड़े

✲ जोड़ियाँ मिलाओ :

'अ'	'ब'
(क) पेड़	सोनू हाथी
(ख) दो बच्चे	मेला
(ग) बीमार	अनोखा उपहार
(घ) पड़ोस का गाँव	भूखे
	सवारी

सदैव ध्यान में रखो

प्रत्येक परिस्थिति का सामना हँसते हुए करना चाहिए ।

भाषा की ओर

अर्थ के आधार पर वाक्य पढ़ो, समझो और उचित स्थान पर लिखो :

१. बच्चे हँसते-हँसते खेल रहे थे ।

२. माला घर नहीं जाएगी ।

३. इसे हिमालय क्यों कहते हैं ?

४. सदैव सत्य के पथ पर चलो ।

५. वाह ! क्या बनावट है ताजमहल की !

६. कश्मीर का सौंदर्य देखकर तुम्हें आश्चर्य होगा ।

७. खूब पढ़ो खूब बढ़ो ।

८. यदि बिजली आएगी तो रोशनी होगी ।

विस्मयार्थक वाक्य

विधानार्थक वाक्य ______ ______

निषेधार्थक वाक्य ______ ______

इच्छार्थक वाक्य

संकेतार्थक वाक्य

प्रश्नार्थक वाक्य ______ ______

आज्ञार्थक वाक्य ______ ______

संभावनार्थक वाक्य

पहले वाक्य में क्रिया के करने या होने की सामान्य सूचना मिलती है । अतः यह वाक्य **विधानार्थक वाक्य** है । दूसरे वाक्य में आने का अभाव सूचित होता है क्योंकि इसमें **नहीं** का प्रयोग हुआ है । अतः यह **निषेधार्थक वाक्य** है । तीसरे वाक्य में प्रश्न पूछने का बोध होता है । इसके लिए **क्यों** का प्रयोग हुआ है । अतः यह **प्रश्नार्थक वाक्य** है । चौथे वाक्य में आदेश दिया है । इसके लिए **चलो** शब्द का प्रयोग हुआ है । अतः यह **आज्ञार्थक वाक्य** है । पाँचवें वाक्य में विस्मय-आश्चर्य का भाव प्रकट हुआ है । इसके लिए **वाह** शब्द का प्रयोग हुआ है । अतः यह **विस्मयार्थक वाक्य** है । छठे वाक्य में संदेह या संभावना व्यक्त की गई है । इसके लिए **होगा** शब्द का प्रयोग हुआ है । अतः यह **संभावनार्थक वाक्य** है । सातवें वाक्य में इच्छा, आशीर्वाद व्यक्त किया गया है । इसके लिए **खूब पढ़ो, खूब बढ़ो** का प्रयोग हुआ है । अतः यह **इच्छार्थक वाक्य** है । आठवें वाक्य में एक क्रिया का दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का बोध होता है । इसके लिए **बिजली, रोशनी** शब्दों का प्रयोग हुआ है । अतः यह **संकेतार्थक वाक्य** है ।

● सुनो, समझो और पढ़ो :

५. (अ) असली गवाह

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने तेनालीराम की बुद्‌धिमानी एवं न्याय करने की क्षमता पर प्रकाश डाला है ।

बहुत पहले की बात है । एक दिन राजा कृष्णदेव राय दरबार में बैठे दरबारियों से किसी गंभीर विषय पर बातचीत कर रहे थे। तभी बाहर से किसी की आवाज सुनाई दी– ''दुहाई हो महाराज ! दुहाई ! मुझे न्याय दें । मेरा न्याय करें ।'' तीन लोग आपस में लड़ते–झगड़ते दरबार में पहुँचे। उनमें शहर का प्रसिद्‌ध हलवाई बालचंद्रन था और बाकी दो अजनबी थे ।

बालचंद्रन महाराज के पैरों पर गिरकर बोला, ''महाराज ! मुझे इन दो ठगों से बचाएँ। ये सिक्कों की मेरी थैली लूटना चाहते हैं। इन्होंने मुझे निर्दयता से पीटा भी है ।'' उन दोनों ने अपना बचाव करते हुए कहा ''महाराज ! ये हमारा धन हमें वापस नहीं कर रहा है । यह हमारी थैली है । इसने ये सिक्के हमसे लूटे हैं ।''

बालचंद्रन से पूछा गया तो वह हाथ जोड़कर बोला, ''महाराज ! दुकान बंद करते समय मैंने सारे सिक्के गिनकर थैली में रखे और चलने ही वाला था कि ये आ पहुँचे और मेरी थैली छीनने की कोशिश की ।''

''नहीं, ये झूठ बोल रहा है, थैली हमारी है । आप पैसे गिन लें । इसमें पूरे पाँच सौ सिक्के हैं'' अजनबियों ने कहा । महाराज यह तय नहीं कर पा रहे थे कि धन का असली मालिक कौन है ? गंभीर सोच–विचार के बाद उन्होंने तेनालीराम से कहा, ''समस्या का पता लगाओ, असली अपराधी को सजा मिलनी चाहिए ।''

तेनालीराम उन तीनों को कोने में ले गए और फिर से पूछताछ प्रारंभ की । उन्हें यही लगा कि बालचंद्रन नामी हलवाई है, वह ऐसी हरकत नहीं कर सकता पर उसकी बेगुनाही साबित भी तो करनी चाहिए थी । कोई गवाह भी मौजूद नहीं था ।

तभी उनके दिमाग की बत्ती जल उठी । उन्हें एक तरकीब सूझी । उन्होंने सिपाही को आदेश दिया– ''एक बड़े बरतन में उबलता पानी लाओ ।''

दरबार में सभी के चेहरों पर परेशानी थी । वे हैरान थे कि भला उबलते पानी का यहाँ क्या काम था ? उबलते पानी का बरतन एक चौकी पर रखा गया । तेनालीराम ने सारे सिक्के गर्म पानी में डाल दिए । कुछ ही देर में पानी पर घी तैरने लगा । हर कोई तेनालीराम के चेहरे पर मुसकान देख सकता था । तेनालीराम ने समझाया, ''महाराज, दूध का दूध, पानी का पानी हो गया । हमें इस कहानी की सच्चाई और गवाह दोनों का पता चल गया है । असली अपराधी पकड़े गए हैं । सिक्कों से भरी थैली इन अजनबियों की नहीं, बालचंद्रन की है ।'' ''तुम कैसे कह सकते हो ? क्या सबूत है ?'' महाराज ने पूछा । ''महाराज ! मिठाइयाँ बेचते समय अक्सर बालचंद्रन के हाथों पर घी लग जाता है । अब वही घी, गवाही देने के लिए पानी के ऊपर तैर आया है ।'' दोनों अजनबियों के चेहरे पीले पड़ गए । उन्होंने भागना चाहा पर सिपाहियों ने पकड़ा और जेल में डाल दिया । बालचंद्रन तेनालीराम को धन्यवाद दे खुशी–खुशी लौट गया । उसे सिक्कों की थैली वापिस मिल गई थी ।

महाराज ने भी तेनालीराम की चतुराई की प्रशंसा की और यथोचित पुरस्कार भी दिए ।

❑ उचित आरोह–अवरोह के साथ कहानी का वाचन करें । विद्यार्थियों से एकल, गुट में मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से कहानी स्पष्ट करें । विद्यार्थियों को उनके शब्दों में यह कहानी एवं अन्य कहानी कहने के लिए प्रोत्साहित करें ।

● **सुनो, पढ़ो और गाओ :**

५. (ब) जीवन

-हस्तीमल 'हस्ती'

जन्म : ११ मार्च १९४६ अमेठ, राजसमंद (राजस्थान) **रचनाएँ :** क्या कहें किससे कहें, कुछ और तरह से भी आदि गजल संग्रह ।
परिचय : हस्तीमल 'हस्ती' जी जाने माने गजलकार है । गजल के अतिरिक्त उन्होंने दोहे और गीत भी लिखे हैं ।

प्रस्तुत रचना में गजलकार ने सभी के साथ स्नेहपूर्वक, हिल-मिलकर रहने की बात कही है ।

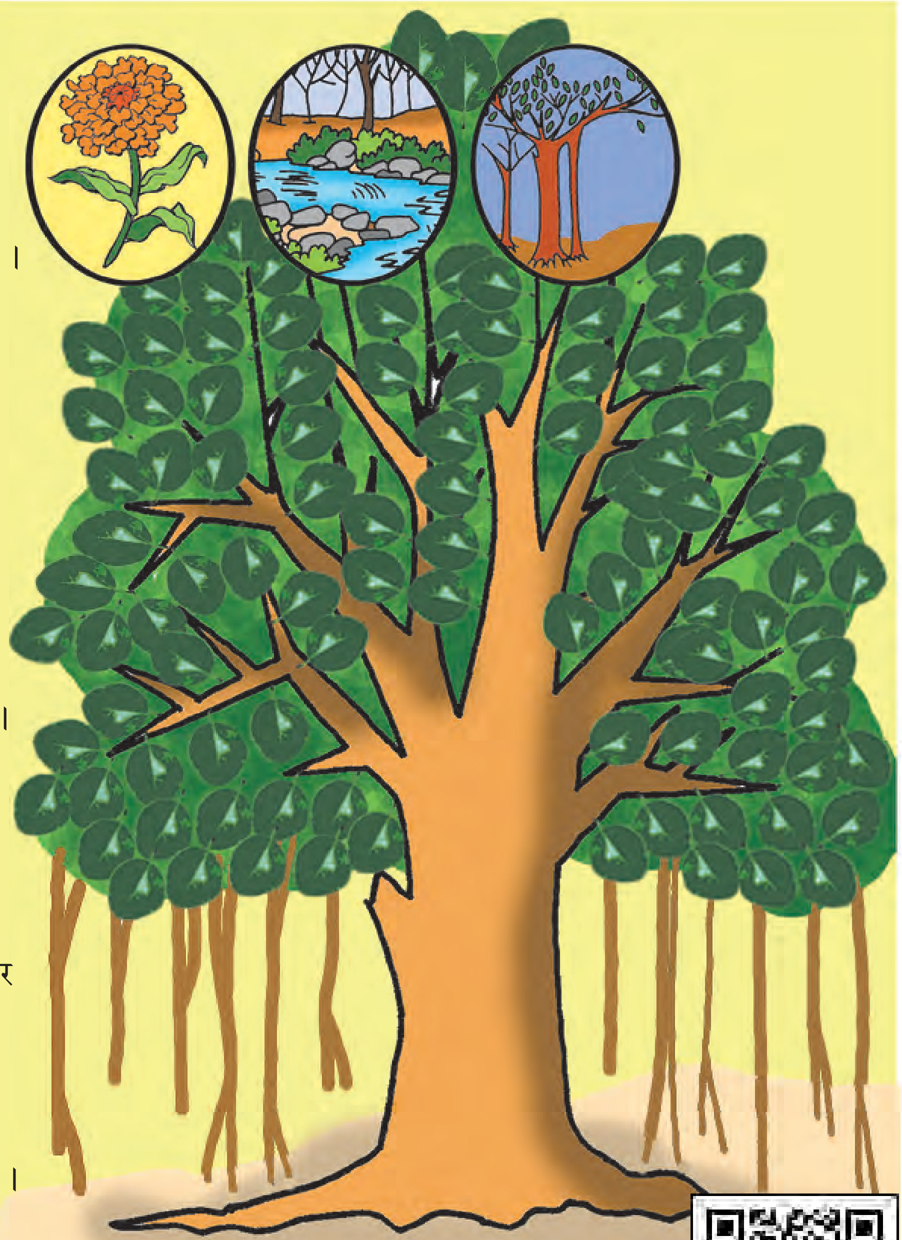

सबको गले लगाते चलना,
स्नेह नगर से जब भी गुजरना ।

अनगिन बूँदों में कुछ को ही
आता है फूलों पे ठहरना ।

बरसों याद रखें ये लहरें
सागर से यूँ पार उतरना ।

फूलों का अंदाज सिमटना,
खुशबू का अंदाज बिखरना ।।

गिरना भी है बहना भी है
जीवन भी है कैसा झरना

अपनी मंज़िल ध्यान में रखकर
दुनिया की राहों से गुजरना ।

पर्वत,मिट्टी, पेड़ ज्यों रहते
जग में सबसे हिलमिल रहना ।

LCHG7X

❑ लय ताल, आरोह-अवरोह के साथ गजल गाएँ । विद्यार्थियों से समूह में गवाएँ । गजल से प्राप्त जीवनमूल्यों के संदर्भ में चर्चा करें, कराएँ । विद्यार्थी बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं, पूछें । अधोरेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश की सहायता से ढूँढ़ने के लिए कहें ।

● **सुनो, समझो और पढ़ो :**

६. कुछ स्मृतियाँ

– डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

जन्म : १५ अक्तूबर १९३१, रामेश्वरम (तमिळनाडु) **मृत्यु :** २७ जुलाई २०१५, **रचनाएँ :** अग्नि की उड़ान, छुआ आसमान ।
परिचय : डॉ. कलाम ने भारत के राष्ट्रपति पद को विभूषित किया था । आपको 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया है ।
इस आत्मकथा अंश में लेखक ने अपने बचपन की कुछ स्मृतियों को शब्दांकित किया है ।

खोजबीन

अंतरजाल से पद्‌मभूषण से विभूषित विभूतियों की जानकारी का संकलन करके सुनाओ ।

रामनाथपुरम में रहते हुए अयादुरै सोलोमन से मेरे संबंध एक गुरु-शिष्य के नाते से अलग हटकर काफी प्रगाढ़ हो गए थे । उनके साथ रहते हुए मैंने यह जाना कि व्यक्ति खुद अपने जीवन की घटनाओं पर काफी असर डाल सकता है । अयादुरै सोलोमन कहा करते थे-'जीवन में सफल होने और नतीजों को हासिल करने के लिए तुम्हें तीन प्रमुख शक्तिशाली ताकतों को समझना चाहिए-इच्छा, आस्था और विश्वास ।' श्री सोलोमन मेरे लिए बहुत ही श्रद्‌धेय बन गए थे । उन्होंने ही मुझे सिखाया कि मैं जो कुछ भी चाहता हूँ, पहले उसके लिए मुझे तीव्र कामना करनी होगी फिर निश्चित रूप से मैं उसे पा सकूँगा । मैं खुद अपनी जिंदगी का ही उदाहरण लेता हूँ । बचपन से ही मैं आकाश एवं पक्षियों के उड़ने के रहस्यों के प्रति काफी आकर्षित था । सारस को समुद्र के ऊपर अक्सर मँड़राते देखता था । अन्य

दूसरे पक्षियों को ऊँची उड़ानें भरते देखा करता था । हालाँकि मैं एक बहुत ही साधारण स्थान का लड़का था लेकिन मैंने निश्चय किया कि एक दिन मैं भी आकाश में ऐसी उड़ानें भरूँगा । वास्तव में कालांतर में उड़ान भरने वाला मैं रामेश्वरम का पहला बालक निकला ।

अयादुरै सोलोमन सचमुच एक महान शिक्षक थे क्योंकि वे सभी विद्‌यार्थियों को उनके भीतर छिपी शक्ति एवं योग्यता का आभास कराते थे । सोलोमन ने मेरे स्वाभिमान को जगाकर एक ऊँचाई दी थी, और मुझे एक ऐसे माता-पिता के बेटे जिन्हें शिक्षा का अवसर नहीं मिल पाया था, यह आश्वस्त कराया कि मैं भी अपनी आकांक्षाओं को पूरा कर सकता हूँ । वे कहा करते थे-'निष्ठा एवं विश्वास से तुम अपनी नियति बदल सकते हो ।'

बात उस समय की है जब मैं चौथी 'फार्म' में था । सारी कक्षाएँ स्कूल के अहाते में अलग-अलग झुंडों के रूप में लगा करती थीं । मेरे गणित के शिक्षक रामकृष्ण अय्यर एक दूसरी कक्षा को पढ़ा रहे थे । अनजाने में ही मैं उस कक्षा से होकर निकल गया । तुरंत ही एक प्राचीन परंपरावाले तानाशाह गुरु की तरह रामकृष्ण अय्यर ने मुझे गरदन से पकड़ा और भरी कक्षा के सामने बेंत लगाए । कई महीनों बाद जब गणित में मेरे पूरे नंबर आए तब रामकृष्ण अय्यर ने स्कूल की सुबह की प्रार्थना में सबके सामने यह घटना सुनाई-'मैं जिसकी बेंत से

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ किसी परिच्छेद का वाचन करें । विद्‌यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । प्रतिदिन अपने दिनभर के अनुभवों को लिखने के लिए प्ररित करें । आगे चलकर क्या बनना चाहते हैं और क्यों, यह बताने के लिए कहें ।

स्वयं अध्ययन

भारत के प्रक्षेपणास्त्रों की जानकारी पढ़ो और तालिका बनाओ ।

www.isro.gov.in

नाम | कब छोड़ा गया ? वर्ष | कहाँ से ?

पिटाई करता हूँ वह एक महान व्यक्ति बनता है । मेरे शब्द याद रखिए, यह छात्र विद्‌यालय और अपने शिक्षकों का गौरव बनने जा रहा है ।' उनके द्‌वारा की गई यह प्रशंसा क्या एक भविष्यवाणी थी ?

श्वाट्‌र्ज हाइस्कूल से शिक्षा पूरी करने के बाद मैं सफलता हासिल करने के प्रति आत्मविश्वास से सराबोर छात्र था । मैंने एक क्षण भी सोचे बिना और आगे पढ़ाई करने का फैसला कर लिया । उन दिनों हमें व्यावसायिक शिक्षा की संभावनाओं के बारे में कोई जानकारी तो थी नहीं । उच्च शिक्षा का सीधा-सा अर्थ कॉलेज जाना समझा जाता था । सबसे नजदीक कॉलेज तिरुचिरापल्ली में था । उन दिनों इसे 'तिरिचनोपोली' कहा जाता था और संक्षेप में 'त्रिची' ।

जब कभी भी मैं त्रिची से रामेश्वरम लौटता तो मेरे बड़े भाई मुस्तफा कलाम, जो रेलवे स्टेशन रोड पर परचून की एक दुकान चलाते थे, मुझसे थोड़ी-बहुत मदद करवा लेते थे और कुछ-कुछ घंटों के लिए दुकान को मेरे जिम्मे छोड़ जाते थे । मैं तेल, प्याज, चावल और दूसरा हर सामान बेच लेता था । मैंने पाया कि सिगरेट और बीड़ी सबसे ज्यादा बिकने वाली वस्तुएँ थीं । मुझे ताज्जुब हुआ करता कि गरीब लोग अपनी कड़ी मेहनत की कमाई को किस तरह धुएँ में उड़ा देते हैं । जब मैं मुस्तफा के यहाँ से खाली हो जाता तो अपने छोटे भाई कासिम मुहम्मद की दुकान पर चला जाता । वहाँ मैं शंखों एवं सीपियों से बने अनूठे सामान बेचा करता था । भाइयों की सहायता करना मुझे अच्छा लगता था ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

स्मृतियाँ = यादें
प्रगाढ़ = बहुत अधिक
आस्था = श्रद्‌धा
कामना = इच्छा
आभास = संकेत
आश्वस्त = निश्चिंत
सराबोर = भरा हुआ
परचून की दुकान = किराने की दुकान
ताज्जुब = आश्चर्य
कड़ी = कठिन

विचार मंथन

।। मान दे सम्मान दे, शिक्षा सकल जहान दे ।।

बताओ तो सही

भारत के अबतक के राष्ट्रपतियों के नाम और उनका कार्यकाल बताओ ।

मेरी कलम से

स्त्री शिक्षा से इनपर क्या प्रभाव पड़ता है, लिखो : स्वयं, परिवार, समाज, देश ।

✻ वाक्य का सही क्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखो :

(क) रेलवे स्टेशन रोड पर परचून की एक दुकान चलाते थे

(ख) सबसे नजदीक कॉलेज तिरुचिरापल्ली में था ।

(ग) सोलोमन जी ने मेरे स्वाभिमान को जगाकर एक ऊँचाई दी थी ।

(घ) सारस को समुद्र के ऊपर अक्सर मँड़राते देखता था ।

भाषा की ओर

चित्र के आधार पर सभी कारकों का प्रयोग करके वाक्य लिखो :

१. मछुआरे **ने** जाल फेंका ।

२. ------------------------------

३. ------------------------------

४. ------------------------------

५. ------------------------------

६. ------------------------------

७. ------------------------------

८. ------------------------------

● **सुनो, पढ़ो और गाओ :**

७. प्यारा देश

– हृदयेश मयंक

जन्म : १८ सितंबर १९५१ जौनपुर (उ.प्र.) **रचनाएँ :** मैं, शहर और सूरज, सायरन से सन्नाटे तक, अपने हिस्से की धूप आदि ।
परिचय : आप हिंदी के प्रसिद्‌ध कवि एवं लेखक के रूप में जाने जाते हैं । मंचों और गोष्ठियों में आपका योगदान सराहनीय है ।
प्रस्तुत कविता में कवि ने भारत की विविधता एवं विशेषताओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए अपने प्यारे देश का यशगान किया है ।

सुनो तो जरा

किसी अन्य भाषा में गाए जाने वाले देशप्रेम के गीत सुनो और साभिनय सुनाओ ।

गंगा जिसकी अक्षुण्ण धरोहर
यमुना-सा निर्मल मन जिसका
ऐसा प्यारा देश है किसका ?

सबसे पहले सूरज आकर
रच जाता सिंदूर सुबह का
लाली किरणें चूनर बनतीं
भोर करे शृंगार दुल्हन का
हिमगिरि जैसा रक्षक जिसका
ऐसा प्यारा देश है किसका ?

आसमान छूता मस्तक हो
सागर उठ-उठ चरण धरे
बाँहे हैं पंजाब, हिमांचल
हिम में गंगा जल लहरे
सोना-हीरा कण-कण जिसका
ऐसा प्यारा देश है किसका ?

भाषाएँ खुद गहना बनकर
रूप निखारें इस दुल्हन का
हिंदी कुम-कुम बनकर सोहे
बाँकी बनती छवि दर्पन का
जन, गन, मन अधिनायक जिसका
ऐसा प्यारा देश है किसका ?

खेतों के रक्षक किसान
सीमाओं पर हैं तने जवान
राम-कृष्ण, अल्ला सबके हैं
पढ़ते सब गीता, कुरान
हर पुत्री सावित्री जिसकी
हर सपूत शिव-राणा जिसका
ऐसा प्यारा देश है किसका ?

❑ उचित हाव-भाव के साथ कविता का सामूहिक, साभिनय पाठ करवाएँ । किसी सैनिक/ महत्वपूर्ण व्यक्ति का साक्षात्कार लेने के लिए प्रेरित करें । अपने देश से संबंधित चार पंक्तियों की कविता करने के लिए कहें । अन्य प्रयाण/अभियान गीतों का संग्रह करवाएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द
अक्षुण्ण = समूची, अखंड
धरोहर = अमानत
निर्मल = शुद्‌ध
सोहना = शोभित होना
छवि = सौंदर्य
सपूत = लायक पुत्र

खोजबीन

इस वर्ष का सूर्यग्रहण कब है ? उस समय पशु-पक्षी के वर्तन-परिवर्तन का निरीक्षण करो और बताओ ।

भूगोल सातवीं कक्षा पृष्ठ ७

विचार मंथन

।। खेतों के रक्षक किसान, सीमा के रक्षक जवान ।।

वाचन जगत से

समाचार पत्र से बहादुरी के किस्से पढ़ो और संकलन करो ।

*** गाँव/शहर का वर्णन चार पंक्तियों की कविता में लिखो ।**

भाषा की ओर

निम्नलिखित वाक्य पढ़ो तथा मोटे और (   ) शब्दों पर ध्यान दो :

१. सर्वेश ने परिश्रम किया **और** इस परिश्रम ने उसे सफल बना दिया ।

२. मैं कर्ज में डूबा था **परंतु** मुझे असंतोष न था ।

३. प्रगति पत्र पर माता जी **अथवा** पिता जी के हस्ताक्षर लेकर आओ ।

४. मैं लगातार चलता **तो** मंजिल पा लेता ।

५. मुझे सौ-सौ के नोट देने पड़े **क्योंकि** दुकानदार के पास दो हजार के नोट के छुट्टे नहीं थे ।

उपर्युक्त वाक्यों में **और, परंतु, अथवा, तो, क्योंकि ....** शब्द अलग-अलग स्वतंत्र वाक्यों या शब्दों को जोड़ते हैं । ये शब्द **समुच्चयबोधक अव्यय** हैं ।

१. (वाह !) क्या रंग-बिरंगी छटा है ।

२. (अरे !) हम कहाँ आ गए ?

३. (शाबाश !) इसी तरह साफ-सुथरा आया करो ।

४. (अरे रे !) पेड़ गिर पड़ा ।

५. (छिः !) तुम झूठ बोलते हो ।

उपर्युक्त वाक्यों में **वाह, अरे, शाबाश, अरे रे, छिः,** ये शब्द क्रमशः खुशी, आश्चर्य, प्रशंसा, दुख, घृणा के भाव दिखाते हैं । ये शब्द **विस्मयादिबोधक अव्यय** हैं ।

अभ्यास-२

१. 'यातायात सप्ताह' तथा 'क्रीड़ा सप्ताह' पर पोस्टर बनाओ और कक्षा में प्रदर्शनी लगाओ । (सामग्री- चित्र, चार्ट पेपर, समाचार पत्र, पत्रिका की कतरनें/ उद्घोष आदि ।)

२. दिए गए शब्द कार्ड देखो, पढ़ो और उनकी सहायता से सरल, मिश्र तथा संयुक्त वाक्य बनाकर कक्षा में सुनाओ । (एक शब्द कार्ड का प्रयोग अनेक बार कर सकते हो ।)

रहा	घर	यह	सड़क	पानी	और
राष्ट्रीय	बाईं	उदाहरण	का	बरसना	के
ओर	वहीं	दाईं	भारत	जी	है
एकात्मता	हैं	कुआँ	उत्तम	देश	की

३. 'रमेश पुस्तक पढ़ता है ।' इस वाक्य को सभी काल में परिवर्तित करके भेदों सहित बताओ और लिखो ।

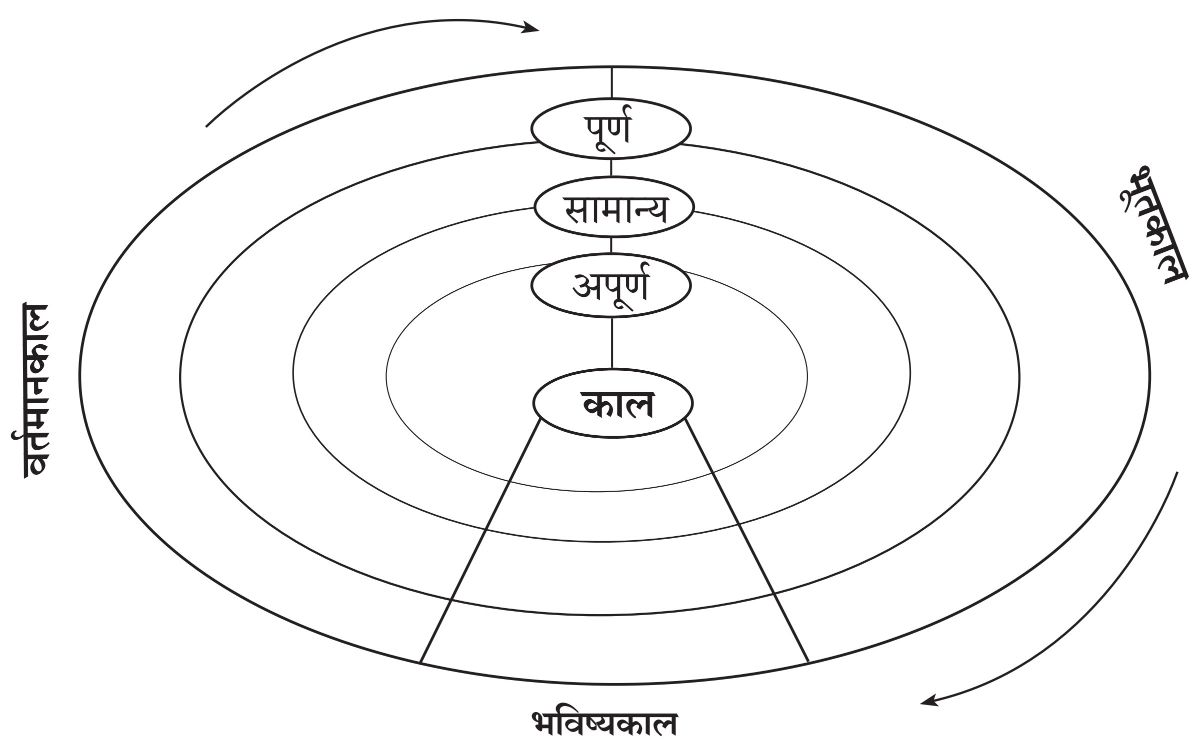

४. अपने आसपास दिखाई देने वाले सांकेतिक चिह्नों के चित्र बनाओ और उन्हें नामांकित करो ।

अभ्यास–३

✻ **चित्रकथा :** चित्रवाचन करके अपने शब्दों में कहानी लिखो और उचित शीर्षक बताओ । अंतिम चित्र में दोनों ने एक–दूसरे से क्या कहा होगा ? लिखो :

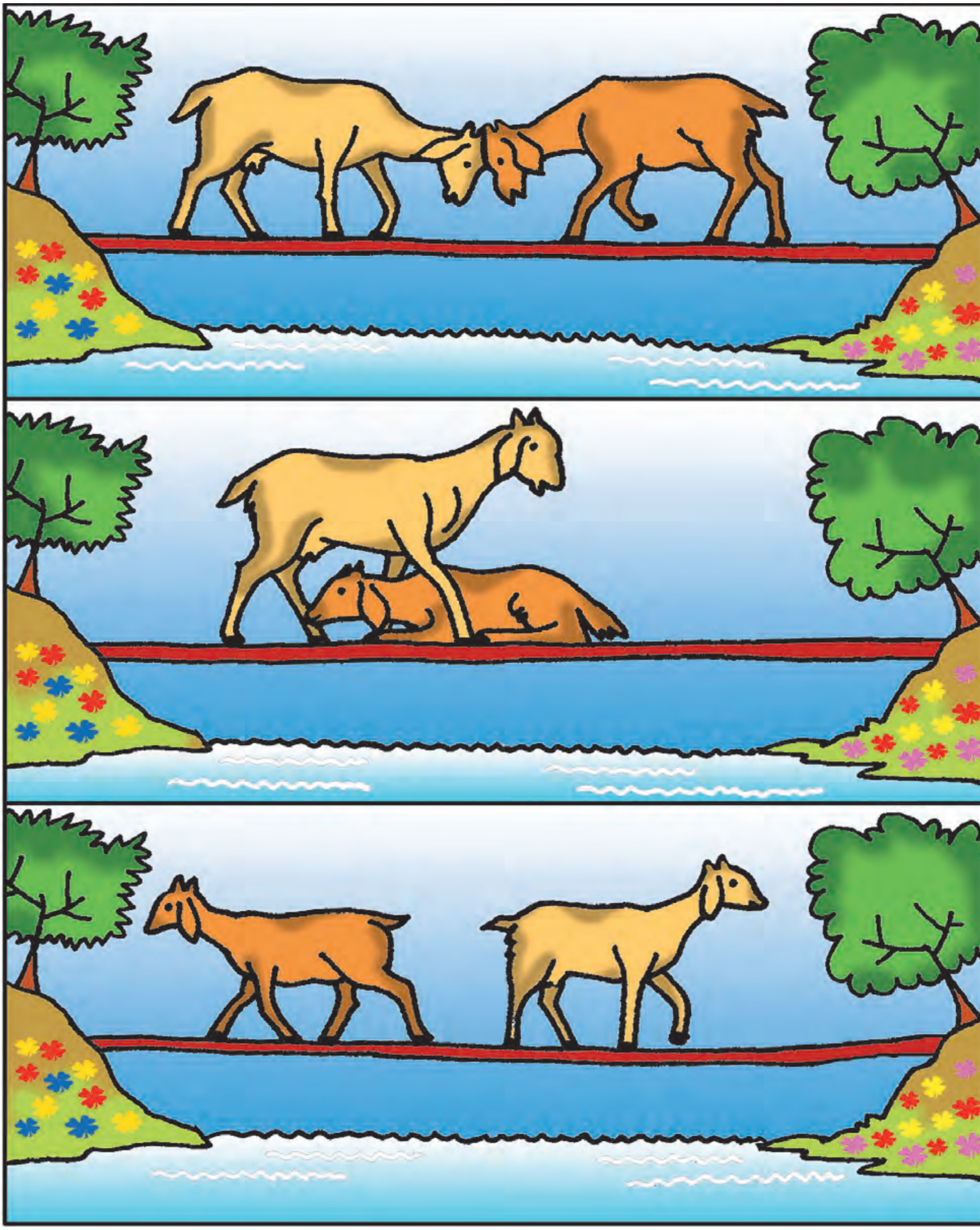

❑ विद्‌यार्थियों से चित्रों का निरीक्षण कराएँ । चित्र में कौन–कौन–सी घटनाएँ घटी होंगी, उन्हें सोचने के लिए कहें । उन्हें चित्रों एवं घटनाओं के आधार पर अन्य कहानी का आधुनिकीकरण करके लिखने के लिए प्रेरित करें और उचित शीर्षक देने के लिए कहें ।

पुनरावर्तन – २

१. निम्नलिखित शब्दों में कौन–से पंचमाक्षर छिपे हुए हैं, सोचो और लिखो :

शब्द	पंचमाक्षर	उसी वर्ग के अन्य शब्द
पंकज	---------	--------, --------
चंचल	---------	--------, --------
ठंडा	---------	--------, --------
संत	---------	--------, --------
पेरांबूर	---------	--------, --------
पंछी	---------	--------, --------
बंदरगाह	---------	--------, --------
उमंग	---------	--------, --------

२. पाठ्यपुस्तक में आए संयुक्ताक्षरयुक्त तीन–तीन शब्द ढूँढ़ो । उनके संयुक्ताक्षर बनने के प्रकारानुसार वर्गीकरण करो । उन शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।

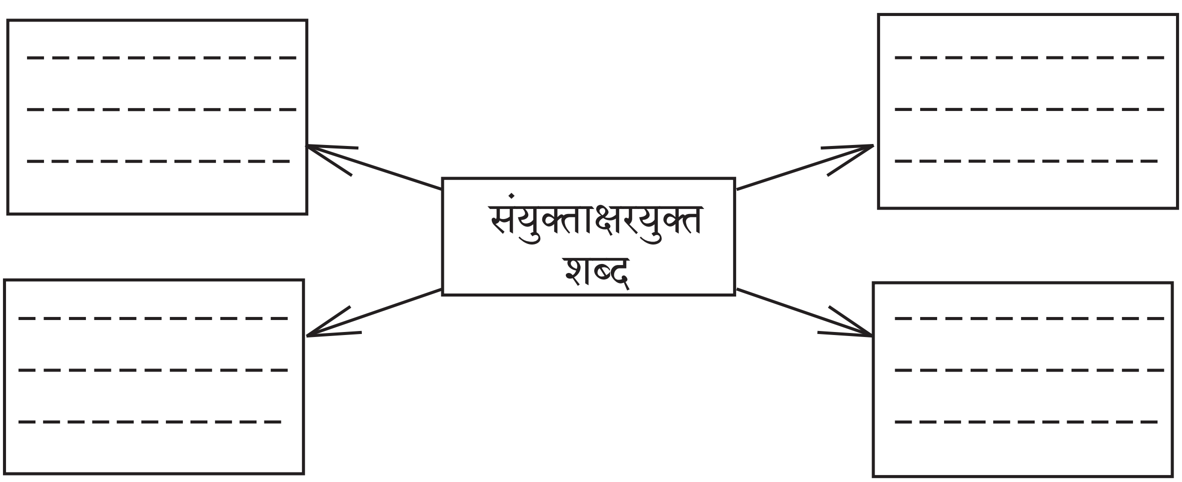

उपक्रम

प्रतिदिन किसी अपठित गद्यांश पर आधारित ऐसे चार प्रश्न तैयार करो, जिनके उत्तर एक–एक वाक्य में हों ।

उपक्रम

प्रतिसप्ताह विद्यालय की विशेष उल्लेखनीय घटना सूचना पट्ट पर लिखो ।

उपक्रम

प्रत्येक सत्र में ग्राफिक्स, वर्ड आर्ट आदि की सहायता से एक–एक विषय पर विज्ञापन बनाओ ।

प्रकल्प

हिंदी की महिला कवयित्री संबंधी जानकारी पर आधारित व्यक्तिगत अथवा गुट में प्रकल्प तैयार करो ।

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें ....

विद्‌यार्थियों के पूर्वज्ञान को दृष्टि में रखते हुए भाषा के नवीन एवं व्यावहारिक प्रयोगों तथा विविध मनोरंजक विषयों के साथ यह पाठ्‌यपुस्तक आपके सम्मुख प्रस्तुत है। इसे स्तरीय (ग्रेडेड) बनाने हेतु दो विभागों में विभाजित करके इसका क्रम 'सरल से कठिन की ओर' रखा गया है। इस पुस्तक में विद्‌यार्थियों के पूर्व अनुभव, घर-परिवार, परिसर को आधार बनाकर भाषाई मूल कौशलों- श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन के साथ-साथ भाषा अध्ययन और अध्ययन कौशल पर विशेष बल दिया गया है। पुस्तक में स्वयं अध्ययन एवं चर्चा को प्रेरित करने वाली रंजक, आकर्षक, सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है।

पाठ्‌यपुस्तक में आए शब्दों और वाक्यों की रचना हिंदी भाषा की व्यावहारिकता को ध्यान में रखकर की गई है। इसमें क्रमिक श्रेणीबद्‌ध एवं कौशलाधिष्ठित अध्ययन सामग्री, अध्यापन संकेत, अभ्यास और उपक्रम दिए गए हैं। विद्‌यार्थियों के लिए लयात्मक कविता, बालगीत, कहानी, संवाद, पत्र आदि विविध विषय दिए गए हैं। इनका उचित हाव-भाव, लय-ताल, आरोह-अवरोह के साथ अध्ययन-अनुभव देना आवश्यक है। विद्‌यार्थियों की स्वयं की अभिव्यक्ति, उनकी कल्पनाशीलता को बढ़ावा देने के लिए वैविध्यपूर्ण स्वाध्याय के रूप में 'जरा सोचो...', 'खोजबीन', 'मैंने समझा', 'अध्ययन कौशल' आदि कृतियाँ भी दी गई हैं। सृजनशीलता की अभिवृद्‌धि के लिए 'मेरी कलम से', 'वाचन जगत से', 'बताओ तो सही', 'सुनो तो जरा', 'स्वयं अध्ययन', तथा 'विचार मंथन' आदि का समावेश किया गया है। इन कृतियों को भलीभाँति समझकर विद्‌यार्थियों तक पहुँचाना अपेक्षित है।

अध्ययन-अनुभव देने से पहले पाठ्‌यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेतों, दिशा निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । सभी कृतियों का विद्‌यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । इलेक्ट्रॉनिक संदर्भों (अंतरजाल, गूगल, संकेतस्थल आदि) में आप सबका विशेष सहयोग नितांत आवश्यक है । भाषा अध्ययन के लिए अधिक-से-अधिक पुस्तक एवं अन्य उदाहरणों द्‌वारा अभ्यास कराएँ । व्याकरण पारंपरिक रूप से नहीं पढ़ाना है । कृतियों और उदाहरणों के द्‌वारा संकल्पना तक ले जाकर विद्‌यार्थियों को पढ़ाना है ।

पूरकपठन सामग्री कहीं पाठ को पोषित करती है और कहीं उनके पठन संस्कृति को बढ़ावा देती हुई रुचि पैदा करती है । अतः पूरकपठन आवश्यक रूप से करवाएँ ।

दैनिक जीवन से जोड़ते हुए भाषा और स्वाध्यायों के सहसंबंधों को स्थापित किया गया है । आवश्यकतानुसार पाठ्‌येतर कृतियों, खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का भी समावेश अपेक्षित है । आप सब पाठ्‌यपुस्तक के माध्यम से जीवन मूल्यों, जीवन कौशलों, मूलभूत तत्त्वों के विकास के अवसर विद्‌यार्थियों को प्रदान करें । क्षमता विधान एवं पाठ्‌यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं/कौशलों, स्वाध्यायों का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' अपेक्षित है ।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि शिक्षक, अभिभावक, सभी इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे ।

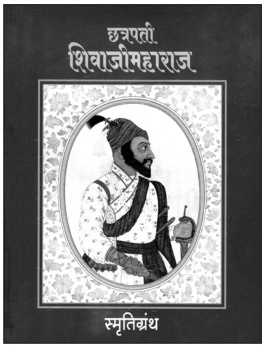

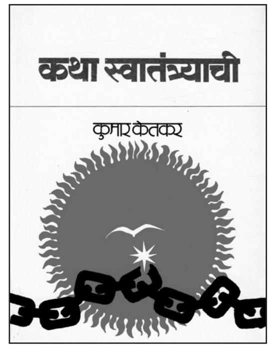

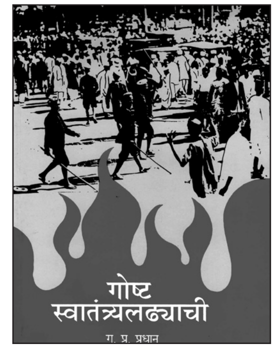

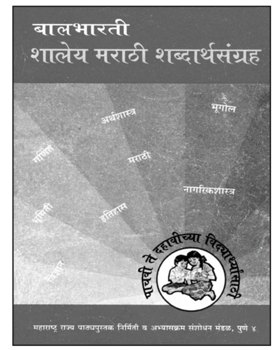

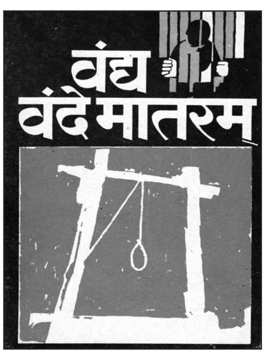

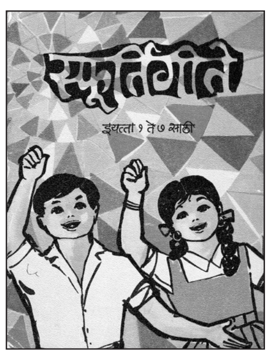

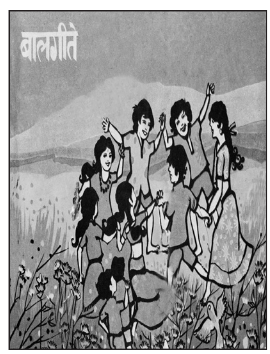

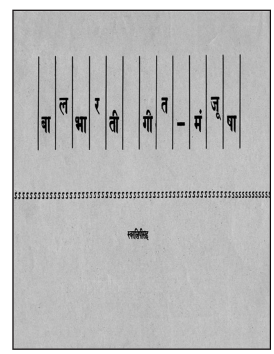

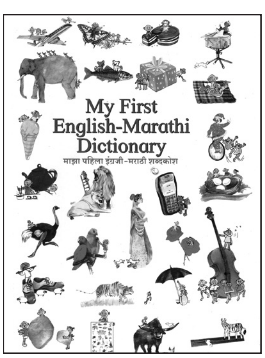

- पाठ्यपुस्तक मंडळाची वैशिष्ट्यपूर्ण पाठ्येत्तर प्रकाशने.
- नामवंत लेखक, कवी, विचारवंत यांच्या साहित्याचा समावेश.
- शालेय स्तरावर पूरक वाचनासाठी उपयुक्त.

पुस्तक मागणीसाठी www.ebalbharati.in, www.balbharati.in संकेत स्थळावर भेट द्या.

साहित्य पाठ्यपुस्तक मंडळाच्या विभागीय भांडारांमध्ये विक्रीसाठी उपलब्ध आहे.

ebalbharati

विभागीय भांडारे संपर्क क्रमांक : पुणे - ☎ २५६५९४६५, कोल्हापूर- ☎ २४६८५७६, मुंबई (गोरेगाव) - ☎ २८७७१८४२, पनवेल - ☎ २७४६२६४६५, नाशिक - ☎ २३९१५११, औरंगाबाद - ☎ २३३२१७१, नागपूर - ☎ २५४७७१६/२५२३०७८, लातूर - ☎ २२०९३०, अमरावती - ☎ २५३०९६५

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

हिंदी सुगमभारती इ. ७ वी

₹ 27.00